

# SKPF-Wincompete Test Series 2026

## पाठ्य सामग्री - PART I : खण्ड 2: भारत का इतिहास

### टेस्ट 07: आधुनिक भारत (19वीं सदी)

## आधुनिक भारत का विकास

### अध्याय 1: ब्रिटिश आर्थिक नीतियां: धन का निष्कासन (Drain of Wealth) एवं वि-औद्योगिकीकरण

यह अध्याय 19वीं शताब्दी के दौरान भारत की अर्थव्यवस्था में आए उन संरचनात्मक परिवर्तनों का विश्लेषण करता है जिन्होंने भारत को 'सोने की चिड़िया' से एक 'निर्यात उन्मुख उपनिवेश' में बदल दिया।

#### 1. धन का निष्कासन (Drain of Wealth Theory)

धन के निष्कासन का अर्थ भारत से धन-संपदा का इंग्लैंड जाना था, जिसके बदले भारत को कोई भौतिक लाभ प्राप्त नहीं होता था।

- **सर्वप्रथम प्रतिपादन:** दादाभाई नौरोजी ने 2 मई, 1867 को लंदन में 'ईस्ट इंडिया एसोसिएशन' की बैठक में अपने शोध पत्र 'England's Debt to India' में किया।
- **मुख्य रचना:** 'Poverty and Un-British Rule in India' (1901)।
- **निष्कासन के माध्यम:**
  - ईस्ट इंडिया कंपनी के हिस्सेदारों का लाभांश।
  - ब्रिटिश अधिकारियों के वेतन, भत्ते और पेंशन।
  - इंग्लैंड से लिए गए ऋण का ब्याज।
  - 'होम चार्ज' (गृह प्रभार)।
- **अन्य समर्थक:** महादेव गोविंद रानाडे, आर.सी. दत्त (Economic History of India)। आर.सी. दत्त ने इसे 'बहता हुआ रक्त' (Flowing Blood) कहा।

#### 2. वि-औद्योगिकीकरण (De-industrialization)

ब्रिटिश व्यापारिक नीतियों के कारण भारत के पारंपरिक हस्तशिल्प और कुटीर उद्योगों का पतन 'वि-औद्योगिकीकरण' कहलाता है।

- **एकतरफा मुक्त व्यापार (One-way Free Trade):** 1813 के चार्टर एक्ट के बाद ब्रिटिश माल पर आयात शुल्क लगभग समाप्त कर दिया गया, जबकि भारतीय माल पर इंग्लैंड में भारी शुल्क लगाया गया।
- **प्रभाव:** ढाका, मुर्शिदाबाद और सूरत जैसे औद्योगिक केंद्र उजड़ गए।
- **विलियम बेंटिक का कथन:** "इस दरिद्रता का व्यापार के इतिहास में कोई जोड़ नहीं है। सूती बुनकरों की हड्डियाँ भारत के मैदानों को सफेद कर रही हैं।"

### 3. विश्लेषण: आर्थिक राष्ट्रवाद का उदय

19वीं सदी की ब्रिटिश आर्थिक नीतियां केवल 'व्यापारिक लाभ' के लिए नहीं थीं, बल्कि भारत को ब्रिटिश उद्योगों के लिए 'कच्चे माल की मंडी' और 'तैयार माल का उपभोक्ता' बनाना चाहती थीं। दादाभाई नौरोजी द्वारा 'धन के निष्कासन' के खुलासे ने भारतीयों के मन में पहली बार यह विचार डाला कि उनकी गरीबी का मुख्य कारण ब्रिटिश शासन है। इसने 'राजनैतिक राष्ट्रवाद' से पहले 'आर्थिक राष्ट्रवाद' को जन्म दिया। RPSC की दृष्टि से **होम चार्जेज** और **आर.सी. दत्त** की पुस्तक का महत्व अत्यधिक है क्योंकि ये तथ्य बार-बार पूछे जाते हैं।

### 4. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य:** दादाभाई नौरोजी को '**Grand Old Man of India**' कहा जाता है।
- **तथ्य:** 1896 के कलकत्ता अधिवेशन में कांग्रेस ने आधिकारिक रूप से 'धन के निष्कासन' के सिद्धांत को स्वीकार किया।
- **नोट:** ब्रिटिश इतिहासकारों ने इसे 'निष्कासन' के बजाय 'भारत के विकास के लिए दी गई सेवाओं का प्रतिफल' बताकर इसका बचाव किया।
- **विरोधाभास:** जहाँ ब्रिटिश मानते थे कि रेलवे ने भारत को आधुनिक बनाया, वहीं भारतीय राष्ट्रवादियों (तिलक आदि) ने इसे 'दूसरे की पत्नी को सजाने' जैसा बताया।

### 5. सन्दर्भ तालिका

अवधारणा / पुस्तक	लेखक / विचारक	मुख्य बिंदु
Poverty and Un-British Rule in India	दादाभाई नौरोजी	निष्कासन का प्रथम आधिकारिक ग्रंथ।
Economic History of India	आर.सी. दत्त	भारत के आर्थिक इतिहास पर पहली व्यवस्थित पुस्तक।
होम चार्जेज	ब्रिटिश शासन	भारत सचिव और उनके कार्यालय का व्यय।
इम्पीरियल प्रेफरेंस	ब्रिटिश सरकार	ब्रिटिश आयात पर विशेष रियायतें।

## अध्याय 2: भू-राजस्व व्यवस्थाएं: स्थायी बंदोबस्त, रैयतवाड़ी एवं महालवाड़ी

ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी का मुख्य उद्देश्य अधिकतम राजस्व प्राप्त करना था। इसके लिए उन्होंने भारत के विभिन्न हिस्सों में तीन अलग-अलग भू-राजस्व प्रणालियाँ लागू कीं।

### 1. प्रणालियों का तुलनात्मक अध्ययन

विशेषता	स्थायी बंदोबस्त (Zamindari)	रैयतवाड़ी (Ryotwari)	महालवाड़ी (Mahalwari)
प्रवर्तक	लॉर्ड कॉर्नवालिस (1793)	थॉमस मुनरो, अलेक्जेंडर रीड	होल्ट मैकेंजी (1822)
क्षेत्र	बंगाल, बिहार, ओडिशा, उ. कर्नाटक	मद्रास, बॉम्बे, असम	उत्तर-पश्चिम प्रांत, पंजाब, अवध
कुल भूमि का %	19%	51%	30%
राजस्व निर्धारण	जमींदार के साथ (स्थायी)	सीधे किसान (रैयत) के साथ	गाँव (महाल) के साथ
राजस्व की दर	पूर्व-निर्धारित (निश्चित)	अत्यधिक उच्च (50% से 60%)	समय-समय पर परिवर्तनशील

### 2. प्रणालियों का विस्तृत विवरण

#### A. स्थायी बंदोबस्त (Permanent Settlement)

इसे 'इस्तमरारी' या 'जमींदारी' बंदोबस्त भी कहा जाता है।

- **सूर्यास्त कानून (Sunset Law):** जमींदार को एक निश्चित तिथि के सूर्यास्त तक राजस्व जमा करना अनिवार्य था, अन्यथा उसकी जमींदारी नीलाम कर दी जाती थी।

- **अधिकार:** जमींदार को भूमि का 'स्वामी' बना दिया गया, जिससे किसानों का दर्जा 'किरायेदार' (Tenants) जैसा हो गया।

### B. रैयतवाड़ी व्यवस्था (Ryotwari System)

दक्षिण और पश्चिम भारत में जमींदारों के अभाव के कारण यह व्यवस्था सीधे किसानों के साथ की गई।

- **प्रभाव:** यद्यपि बीच के बिचौलिए (जमींदार) खत्म हो गए, लेकिन स्वयं 'सरकार' एक बड़ा जमींदार बन गई। राजस्व की दरें इतनी अधिक थीं कि किसानों को साहूकारों के चंगुल में फंसना पड़ा।

### C. महालवाड़ी व्यवस्था (Mahalwari System)

यहाँ इकाई 'महाल' (गाँव या गाँवों का समूह) को माना गया।

- **लम्बरदार:** गाँव का मुखिया राजस्व वसूल कर सरकार को देता था। सामूहिक उत्तरदायित्व की यह व्यवस्था पंजाब और उत्तर-पश्चिम प्रांतों (जो वर्तमान राजस्थान की सीमाओं से मिलते थे) में प्रभावी रही।

[Image comparing the flow of revenue in Zamindari vs Ryotwari vs Mahalwari systems]

## 3. व्यवस्थाओं के विनाशकारी प्रभाव

1. **किसानों की दरिद्रता:** राजस्व की दरें अत्यधिक ऊँची थीं। फसल नष्ट होने पर भी राजस्व में कोई छूट नहीं दी जाती थी।
2. **साहूकारी पाश:** कर चुकाने के लिए किसानों ने साहूकारों से ऊँची ब्याज दरों पर ऋण लिया, जिससे वे आजीवन ऋण के जाल में फंस गए।
3. **कृषि का व्यवसायीकरण:** अंग्रेजों ने राजस्व नकद (Cash) में मांगा, जिससे किसानों को खाद्यान्न के स्थान पर 'नकदी फसलें' (कपास, नील, अफीम) उगाने के लिए मजबूर होना पड़ा।
4. **अनुपस्थित जमींदारी (Absentee Landlordism):** जमींदार शहरों में रहने लगे और गाँवों में राजस्व वसूली के लिए निर्दयी गुमाश्ते (एजेंट) नियुक्त कर दिए।

## 4. किसान विद्रोहों की पृष्ठभूमि

इन्हीं आर्थिक शोषणकारी नीतियों ने 19वीं सदी के किसान आंदोलनों को जन्म दिया:

- **नील विद्रोह (1859-60):** बंगाल के किसानों द्वारा जबरन नील की खेती के विरुद्ध।
- **पाबना विद्रोह (1873):** जमींदारों द्वारा लगान बढ़ाए जाने के विरोध में।
- **दक्कन उपद्रव (1875):** साहूकारों के विरुद्ध किसानों का आक्रोश, जो रैयतवाड़ी व्यवस्था का सीधा परिणाम था।

## 5. विश्लेषणात्मक विवरण (Analysis Box)

विश्लेषण: भूमि का वस्तुकरण (Commodification of Land)

ब्रिटिश नीतियों से पहले, भारत में भूमि 'बेचने वाली वस्तु' नहीं थी। इन तीन व्यवस्थाओं ने भूमि को एक 'संपत्ति' बना दिया जिसे राजस्व न चुकाने पर छीना या बेचा जा सकता था। इससे पारंपरिक ग्रामीण समुदायों का सामाजिक ताना-बाना टूट गया। RPSC परीक्षाओं में अक्सर 'सूर्यास्त कानून' और 'विभिन्न व्यवस्थाओं के प्रतिशत' पर प्रश्न पूछे जाते हैं। यह समझना आवश्यक है कि इन व्यवस्थाओं ने भारत में एक नया सामाजिक वर्ग 'परजीवी जमींदार' और 'भूमिहीन मजदूर' पैदा किया।

## 6. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य:** 'महालवाड़ी व्यवस्था' को 1833 में **मार्टिन बर्ड** के निर्देशन में संशोधित किया गया था (इन्हें उत्तर भारत में भू-राजस्व व्यवस्था का जनक माना जाता है)।
- **नोट:** राजस्थान की रियासतों में इन प्रणालियों का सीधा प्रभाव नहीं था, लेकिन वहाँ की जागीरदारी व्यवस्था ने ब्रिटिश प्रभाव में आकर किसानों का शोषण बढ़ाया।
- **विरोधाभास:** अंग्रेजों ने दावा किया कि 'रैयतवाड़ी' किसानों के हित में है, लेकिन वास्तव में यह व्यवस्था जमींदारी से भी अधिक शोषणकारी सिद्ध हुई क्योंकि इसमें सरकार सीधे वसूली करती थी।

## 7. संदर्भ तालिका (Quick Scan)

शब्द / व्यवस्था	मुख्य तथ्य	परीक्षा उपयोगिता
इस्तमरारी	स्थायी बंदोबस्त का दूसरा नाम।	सीधा प्रश्न।
कैष्टन रीड	रैयतवाड़ी का प्रथम प्रयोग (बारा महल जिला)।	तथ्यात्मक प्रश्न।
महाल	गाँवों का समूह / राजस्व इकाई।	अर्थ संबंधी प्रश्न।
नील दर्पण	दीनबंधु मित्र का नाटक (नील विद्रोह पर)।	साहित्यिक संदर्भ।

यह अध्याय 2 पूर्ण हुआ।

क्या मैं अध्याय 3: "प्रशासनिक ढाँचा: सिविल सेवा, पुलिस, न्यायपालिका एवं सेना का विकास" पर कार्य प्रारंभ करूँ? इसमें हम मैकाले, कॉर्नवालिस कोड और प्रशासनिक सुधारों का विस्तृत विवरण देंगे।

## अध्याय 3: प्रशासनिक ढाँचा: सिविल सेवा, पुलिस, न्यायपालिका एवं सेना

ब्रिटिश शासन ने भारत को नियंत्रित करने के लिए चार प्रमुख स्तंभों का विकास किया। लॉर्ड कॉर्नवालिस को इन सुधारों का मुख्य वास्तुकार माना जाता है।

### 1. भारतीय सिविल सेवा (ICS) का विकास

लॉर्ड कॉर्नवालिस को 'भारतीय सिविल सेवा का जनक' कहा जाता है। उन्होंने भ्रष्टाचार रोकने के लिए अधिकारियों के निजी व्यापार पर रोक लगाई और उनके वेतन में वृद्धि की।

- **मैकाले समिति (1854):** 1853 के चार्टर एक्ट के तहत सिविल सेवा में नियुक्ति के लिए 'खुली प्रतियोगिता' की शुरुआत की गई। लॉर्ड मैकाले को इस समिति का अध्यक्ष बनाया गया।
- **प्रमुख पड़ाव:**
  - **1863:** सत्येंद्रनाथ टैगोर आई.सी.एस. (ICS) परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले **प्रथम भारतीय** बने।
  - **ऐचिसन आयोग (1886):** इस आयोग ने लोक सेवाओं को तीन श्रेणियों—साम्राज्यिक (Imperial), प्रांतीय (Provincial) और अधीनस्थ (Subordinate) में विभाजित करने की सिफारिश की।
- **परीक्षा का स्थान:** 1922 तक यह परीक्षा केवल लंदन में होती थी, उसके बाद यह लंदन और इलाहाबाद (भारत) में एक साथ आयोजित होने लगी।

### 2. पुलिस व्यवस्था का आधुनिकरण

कॉर्नवालिस ने कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए एक पेशेवर पुलिस बल का गठन किया।

- **थाना प्रणाली:** कॉर्नवालिस ने पुराने जमींदारी पुलिस अधिकारियों को समाप्त कर दिया और जिलों को थानों में विभाजित किया। प्रत्येक थाने का प्रमुख 'दरोगा' होता था।
- **अधीक्षक (S.P.):** जिला स्तर पर पुलिस का सर्वोच्च अधिकारी जिला पुलिस अधीक्षक (S.P.) बनाया गया।
- **पुलिस अधिनियम (1861):** 1857 के विद्रोह के बाद पुलिस व्यवस्था को और अधिक संगठित करने के लिए यह अधिनियम लाया गया, जो वर्तमान पुलिस प्रणाली का आधार है।

### 3. न्यायपालिका का विकास: कॉर्नवालिस कोड

न्यायिक व्यवस्था में सुधारों का प्रारंभ वारेन हेस्टिंग्स ने किया था, लेकिन इसे व्यवस्थित रूप कॉर्नवालिस ने दिया।

- **कॉर्नवालिस कोड (1793):** यह 'शक्तियों के पृथक्करण' (Separation of Powers) के सिद्धांत पर आधारित था।
  - इसके तहत 'न्यायिक' और 'राजस्व' प्रशासन को अलग कर दिया गया।
  - जिला कलेक्टर से न्यायिक शक्तियाँ छीन ली गईं और वे केवल राजस्व कार्यों तक सीमित रहे।
- **उच्च न्यायालय अधिनियम (1861):** इसके तहत पुरानी 'सदर अदालतों' को समाप्त कर कलकत्ता, मद्रास और बॉम्बे में **उच्च न्यायालयों** की स्थापना की गई।
- **विधि आयोग:** लॉर्ड मैकाले की अध्यक्षता में प्रथम विधि आयोग का गठन हुआ, जिसने **भारतीय दंड संहिता (IPC)** का मसौदा तैयार किया।

---

#### 4. सेना का पुनर्गठन

सेना ब्रिटिश शक्ति का अंतिम रक्षक थी। 1857 के विद्रोह के बाद इसमें व्यापक परिवर्तन किए गए।

- **पील आयोग (1858):** इस आयोग की सिफारिश पर सेना का 'जाति, धर्म और क्षेत्र' के आधार पर पुनर्गठन किया गया ताकि उनमें एकता न हो सके।
- **संतुलन की नीति:** यूरोपीय सैनिकों और भारतीय सैनिकों के अनुपात को बदला गया। बंगाल में यह \$1:2\$ और मद्रास/बाम्बे में \$1:3\$ कर दिया गया। तोपखाना (Artillery) विभाग पूरी तरह से यूरोपीय सैनिकों के अधीन रखा गया।

---

#### 5. विश्लेषण: 'Steel Frame' का उद्देश्य

ब्रिटिश प्रशासनिक सुधारों का मुख्य उद्देश्य भारत का कल्याण नहीं, बल्कि ब्रिटिश हितों की रक्षा करना और भारत से धन के निष्कासन को सुगम बनाना था। नौकरशाही को जनता से दूर रखा गया ताकि वे बिना किसी भावनात्मक जुड़ाव के ब्रिटिश आदेशों का पालन कर सकें। न्यायपालिका में भी 'कानून का शासन' (Rule of Law) तो था, लेकिन यूरोपीय नागरिकों के लिए विशेष रियायतें थीं। RPSC परीक्षाओं में अक्सर '**कॉर्नवालिस कोड**' और '**मैकाले समिति**' के वर्ष और उनके कार्यों पर प्रश्न पूछे जाते हैं।

---

#### 6. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य:** लॉर्ड कॉर्नवालिस ने सिविल सेवा को '**अनुबंधित**' (Covenanted) और '**अन-अनुबंधित**' (Uncovenanted) श्रेणियों में बाँटा था।
- **तथ्य:** भारतीय दंड संहिता (IPC) 1860 में और दंड प्रक्रिया संहिता (CrPC) 1861 में लागू हुई।
- **नोट:** प्रशासनिक सेवाओं में भारतीयों की भागीदारी रोकने के लिए लॉर्ड लिटन ने परीक्षा की आयु 21 से घटाकर **19 वर्ष** कर दी थी।
- **विरोधाभास:** अंग्रेजों ने 'कानून के शासन' का दावा किया, लेकिन भारतीयों और गोरों के बीच नस्ली भेदभाव प्रशासनिक और न्यायिक स्तर पर हमेशा बना रहा।

## 7. त्वरित संदर्भ तालिका (Quick Scan)

संस्थान / पद	संस्थापक / आयोग	वर्ष / उद्देश्य
पिता (सिविल सेवा)	लॉर्ड कॉर्नवालिस	प्रशासन की शुद्धि।
दरोगा	थाना प्रणाली	स्थानीय कानून व्यवस्था।
विधि आयोग	लॉर्ड मैकाले	कानूनों का संहितीकरण (Codification)।
S.P. का पद	लॉर्ड कॉर्नवालिस	जिला पुलिस का नेतृत्व।
ऐचिसन आयोग	सिविल सेवा सुधार	आयु सीमा और श्रेणियों का निर्धारण।

## अध्याय 4: कृषि का व्यवसायीकरण एवं 19वीं सदी के प्रमुख अकाल

19वीं सदी के उत्तरार्ध में भारतीय कृषि व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन आए। अंग्रेजों ने भू-राजस्व की नकद वसूली और औद्योगिक लाभ के लिए कृषि का स्वरूप बदल दिया।

### 1. कृषि का व्यवसायीकरण (Commercialization of Agriculture)

इसका अर्थ था—खाद्यान्न फसलों (गेहूँ, चावल) के स्थान पर नकदी फसलों (Cash Crops) के उत्पादन पर बल देना।

- **व्यवसायीकरण के कारण:**
  - **ब्रिटिश औद्योगिक क्रांति:** इंग्लैंड के कारखानों के लिए कच्चे माल (नील, कपास, जूट) की मांग।
  - **परिवहन का विकास:** रेलवे और सड़कों के विस्तार ने फसलों को बंदरगाहों तक पहुँचाना आसान बनाया।
  - **राजस्व की नकद मांग:** किसानों को लगान चुकाने के लिए बाजार में बिकने वाली फसलों को उगाने हेतु मजबूर होना पड़ा।
- **प्रमुख नकदी फसलें:**
  - **नील (Indigo):** बिहार और बंगाल में 'तिनकठिया' पद्धति के माध्यम से शोषण।
  - **कपास (Cotton):** अमेरिकी गृहयुद्ध के दौरान भारत से कपास निर्यात में भारी वृद्धि।
  - **चाय एवं कॉफी:** असम और दक्षिण भारत में बागान उद्योगों का विकास।

### 2. व्यवसायीकरण का प्रभाव: एक दोधारी तलवार

- **नकारात्मक प्रभाव:** भारतीय किसानों को अंतरराष्ट्रीय बाजार के उतार-चढ़ाव पर निर्भर होना पड़ा। खाद्यान्न उत्पादन कम होने से 'कृत्रिम अन्न संकट' पैदा हुआ।
- **ऋणग्रस्तता:** किसान साहूकारों के चंगुल में फंस गए क्योंकि नकदी फसलों में निवेश अधिक था और जोखिम भी ज्यादा।

### 3. 19वीं सदी के प्रमुख अकाल (Major Famines)

कृषि के व्यवसायीकरण और निर्यात नीति ने अकालों की बारंबारता बढ़ा दी।

वर्ष	क्षेत्र	अकाल का नाम / संदर्भ	राहत प्रयास
1866-67	ओडिशा	'ओडिशा का अकाल' (भीषण जनहानि)	कैम्बेल आयोग का गठन।

1868-69	राजपुताना (राजस्थान)	'त्रिकाल' (अन्न, जल और घास का संकट)	स्थानीय रियासतों द्वारा राहत कार्य।
1876-78	दक्षिण भारत	'भीषण अकाल' (मद्रास, बॉम्बे, मैसूर)	स्ट्रेची आयोग की नियुक्ति।
1896-97	मध्य एवं उ. भारत	व्यापक अकाल	लायल आयोग का गठन।
1899-1900	संपूर्ण भारत	'छप्पनिया अकाल' (विक्रम संवत् 1956)	मैकडोनेल आयोग।

#### 4. अकाल आयोग एवं अकाल संहिता (Famine Codes)

ब्रिटिश सरकार ने अकालों से निपटने के लिए समय-समय पर आयोगों का गठन किया:

1. **रिचर्ड स्ट्रेची आयोग (1880):** यह सबसे महत्वपूर्ण आयोग था। इसने सिफारिश की कि:
  - अकाल पीड़ितों को सहायता देना 'राज्य का कर्तव्य' है।
  - प्रत्येक प्रांत में 'अकाल कोष' (Famine Fund) बनाया जाए।
  - इसी की सिफारिश पर 'अकाल संहिता' (Famine Code, 1883) तैयार की गई।
2. **जेम्स लायल आयोग (1897):** इसने स्ट्रेची आयोग की सिफारिशों की पुष्टि की और सुरक्षात्मक सिंचाई कार्यों पर बल दिया।
3. **एंथनी मैकडोनेल आयोग (1900):** इसने अकाल राहत कार्यों में 'नैतिक प्रभाव' और स्थानीय संस्थाओं के सहयोग पर बल दिया।

#### 5. विश्लेषण: अकाल—प्राकृतिक आपदा या मानव निर्मित?

19वीं सदी के अकाल केवल 'वर्षा की कमी' का परिणाम नहीं थे। भारतीय राष्ट्रवादी अमर्त्य सेन और आर.सी. दत्त के अनुसार, ये अकाल 'वितरण की विफलता' और ब्रिटिश सरकार की 'निर्यात नीति' के कारण थे। जब देश में लोग भूख से मर रहे थे, तब भी भारत से अनाज का निर्यात इंग्लैंड को किया जा रहा था। कृषि के व्यवसायीकरण ने किसानों की क्रय शक्ति छीन ली थी। RPSC की दृष्टि से 'छप्पनिया अकाल' (राजस्थान का संदर्भ) और 'स्ट्रेची आयोग' की शर्तें अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

#### 6. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य:** राजस्थान में 1899-1900 के अकाल को '**छप्पनिया अकाल**' कहा जाता है क्योंकि यह विक्रम संवत् 1956 में पड़ा था।
- **तथ्य:** लॉर्ड लिटन के समय अकाल के बावजूद 'दिल्ली दरबार' (1877) का आयोजन किया गया, जिसकी तुलना "नीरो के बाँसुरी बजाने" से की गई।
- **नोट:** अकाल संहिता (1883) ने स्पष्ट किया कि 'अक्षम' लोगों को मुफ्त भोजन और 'सक्षम' लोगों को काम के बदले अनाज दिया जाए।
- **विरोधाभास:** अंग्रेजों ने दावा किया कि रेलवे अकाल राहत में मददगार है, लेकिन राष्ट्रवादियों ने तर्क दिया कि रेलवे ने अनाज को अकाल ग्रस्त क्षेत्रों से बाहर ले जाने में तेजी ला दी।

## 7. संदर्भ तालिका (Quick Scan)

आयोग	वर्ष	वायसराय	मुख्य उद्देश्य
कैपबेल आयोग	1866	सर जॉन लॉरेंस	ओडिशा अकाल की जाँच।
स्ट्रेची आयोग	1880	लॉर्ड लिटन	प्रथम व्यवस्थित अकाल नीति।
लायल आयोग	1897	लॉर्ड एल्गिन II	पूर्व नीतियों की समीक्षा।
मैकडोनेल आयोग	1900	लॉर्ड कर्जन	ग्राम स्तर पर राहत कार्य।

## अध्याय 5: आधुनिक उद्योगों का उदय: रेलवे, डाक-तार और संचार व्यवस्था

लॉर्ड डलहौजी (1848-1856) को भारत में 'आधुनिक संचार एवं परिवहन का जनक' माना जाता है। उनके द्वारा किए गए सुधारों ने भारत के आर्थिक और सामाजिक ताने-बाने को स्थायी रूप से बदल दिया।

### 1. भारतीय रेलवे का विकास: "साम्राज्य की धमनियां"

भारत में रेलवे का विकास मुख्य रूप से सैन्य सुरक्षा और व्यापारिक हितों (कच्चे माल का निर्यात) के लिए किया गया था।

- **प्रथम रेल:** 16 अप्रैल, 1853 को बोरीबंदर (मुंबई) से ठाणे के बीच (34 किमी)।
- **गारंटी प्रणाली (Guarantee System):** ब्रिटिश निवेशकों को आकर्षित करने के लिए सरकार ने उनकी पूँजी पर 5% वार्षिक ब्याज की गारंटी दी। यह भारतीय खजाने पर भारी बोझ था।
- **डलहौजी का रेलवे मिनट (1853):** इसमें उन्होंने तर्क दिया कि रेलवे से न केवल विद्रोहों को दबाने में मदद मिलेगी, बल्कि मैनचेस्टर के कपड़ों के लिए आंतरिक बाजार भी खुलेगा।
- **राजस्थान संदर्भ (RPSC विशेष):** राजस्थान में प्रथम रेल 1874 में बांदीकुई (दौसा) से आगरा फोर्ट के बीच चली थी।

### 2. डाक एवं तार व्यवस्था (Post and Telegraph)

संचार के क्षेत्र में डलहौजी के सुधारों ने प्रशासनिक कुशलता को बढ़ा दिया।

- **टेलीग्राफ (तार):** 1851 में प्रथम प्रायोगिक लाइन कलकत्ता से डायमंड हार्बर के बीच शुरू हुई। 1853 में कलकत्ता से आगरा के बीच पहली लंबी टेलीग्राफ लाइन का उद्घाटन हुआ।
  - *ऐतिहासिक महत्व:* 1857 के विद्रोह के समय क्रांतिकारियों ने कहा था— "इस बिजली के तार ने हमारा गला घोट दिया।"
- **डाक सुधार (1854):** 'पोस्टल एक्ट 1854' के तहत भारत में पहली बार डाक टिकट (Half Anna) जारी किए गए और पूरे देश में समान दर (Uniform Postage) लागू की गई।

### 3. आधुनिक उद्योगों का उदय

19वीं सदी के उत्तरार्ध में भारतीय पूँजीपतियों ने ब्रिटिश प्रतिस्पर्धा के बावजूद कुछ आधुनिक उद्योगों की नींव रखी।

- **सूती वस्त्र उद्योग:** 1854 में कावसजी नानाभाई डाबर द्वारा मुंबई में पहली सफल सूती मिल की स्थापना।
- **जूट उद्योग:** 1855 में बंगाल के रिशरा में पहली जूट मिल स्थापित हुई।
- **कोयला उद्योग:** रानीगंज (बंगाल) में कोयला खनन का विस्तार हुआ।
- **चाय एवं कॉफी:** 1833 में 'असम चाय कंपनी' की स्थापना के साथ बागान उद्योगों का प्रारंभ हुआ।

### 4. आर्थिक प्रभाव: विकास बनाम शोषण

- **गाँव की आत्मनिर्भरता का अंत:** रेलवे ने दूर-दराज के गाँवों को वैश्विक बाजार से जोड़ दिया, जिससे स्थानीय दस्तकार बर्बाद हो गए।

- **विदेशी पूँजी का वर्चस्व:** अधिकांश आधुनिक उद्योगों और बागानों पर ब्रिटिश पूँजीपतियों का नियंत्रण था।
- **श्रम शोषण:** मिलों में काम करने वाले मजदूरों की स्थिति अत्यंत दयनीय थी, जिससे आगे चलकर श्रमिक आंदोलनों की नींव पड़ी।

## 5. विश्लेषण: डलहौजी के सुधार—एक अनचाहा वरदान?

डलहौजी का उद्देश्य भारत का 'आधुनिकीकरण' करना नहीं, बल्कि 'औपनिवेशीकरण' को सुदृढ़ करना था। रेलवे को "ब्रिटिश पूँजीवाद का अग्रदूत" कहा गया। लेकिन, अनजाने में इन संचार साधनों ने भारतीयों को भी एक-दूसरे से मिलने और राष्ट्रीय विचारों को साझा करने का मंच प्रदान किया। तिलक ने सही कहा था कि "रेलवे दूसरे की पत्नी को अलंकृत करने जैसा है" (आर्थिक बोझ के संदर्भ में)। RPSC की दृष्टि से 'गारंटी प्रणाली' और 'राजस्थान की प्रथम रेल' से संबंधित तथ्य रक्षात्मक उत्तरों के लिए अनिवार्य हैं।

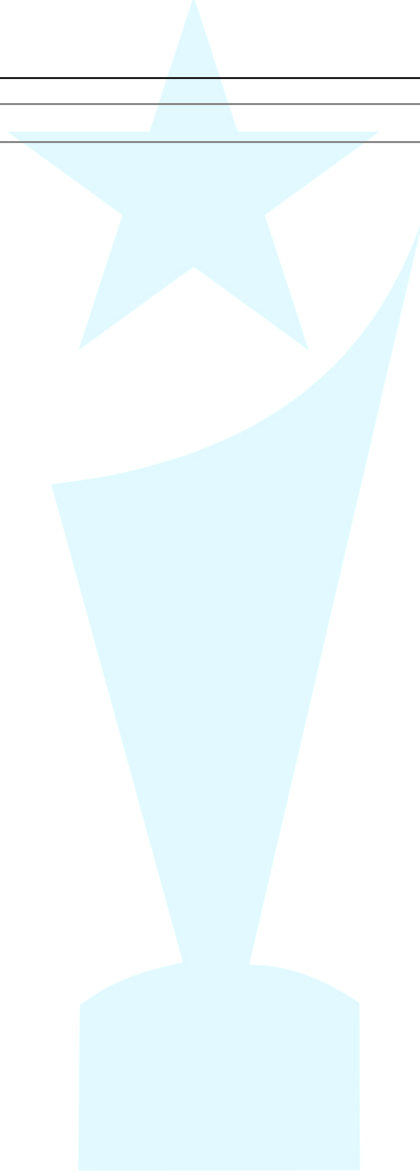
## 6. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य:** डलहौजी ने कलकत्ता में 'इलेक्ट्रिक टेलीग्राफ विभाग' का गठन किया और ओ'शौघनेसी (O'Shaughnessy) को इसका महानिदेशक बनाया।
- **तथ्य:** 1854 में पहली बार **अखिल भारतीय स्तर पर डाक विभाग** की स्थापना हुई।
- **नोट:** रेलवे के स्लीपर बनाने के लिए भारतीय जंगलों की अंधाधुंध कटाई की गई, जिससे पारिस्थितिक असंतुलन पैदा हुआ।
- **विरोधाभास:** जहाँ अंग्रेजों ने रेलवे को 'सभ्यता का वाहक' बताया, वहीं महात्मा गांधी ने इसे "बुराई और रोगों का प्रसारक" माना था।

## 7. संदर्भ तालिका (Quick Scan)

क्षेत्र	प्रथम घटना / वर्ष	प्रमुख व्यक्ति
रेलवे	मुंबई से ठाणे (1853)	लॉर्ड डलहौजी
टेलीग्राफ	कलकत्ता से आगरा (1853)	ओ'शौघनेसी
डाक टिकट	हाफ-आना (1854)	डलहौजी

सूती मिल	मुंबई (1854)	कावसजी डाबर
जूट मिल	रिशरा, बंगाल (1855)	ब्रिटिश पूँजीपति



wincompete

# आधुनिक भारत में राष्ट्रवाद का उदय

## अध्याय 6: राष्ट्रवाद के उदय के कारक: राजनैतिक, आर्थिक एवं सामाजिक पृष्ठभूमि

भारतीय राष्ट्रवाद केवल एक विदेशी शासन के विरुद्ध प्रतिक्रिया नहीं थी, बल्कि यह गहरे ऐतिहासिक, वैधानिक और वैचारिक परिवर्तनों का परिणाम था।

### 1. राजनैतिक एवं प्रशासनिक एकीकरण

ब्रिटिश शासन ने अनजाने में भारत को वह राजनैतिक एकता प्रदान की जो सदियों से लुप्त थी।

- **एकसमान कानून:** हिमालय से कन्याकुमारी तक एक ही दंड संहिता (IPC) और नागरिक संहिता (CrPC) लागू होने से भारतीयों में एकता का भाव जागा।
- **प्रशासनिक ढांचा:** अखिल भारतीय सेवाओं (ICS) ने देश को एक सूत्र में पिरोया। अब एक बंगाली अधिकारी और एक मद्रासी अधिकारी एक ही व्यवस्था का हिस्सा थे।
- **परिवहन:** रेलवे ने भौगोलिक दूरियों को कम किया, जिससे विभिन्न प्रांतों के नेता आपस में मिल सके और विचारों का आदान-प्रदान कर सके।

### 2. आर्थिक शोषण: "साझा दरिद्रता"

अंग्रेजों की भेदभावपूर्ण आर्थिक नीतियों ने राष्ट्रवाद के लिए सबसे मजबूत आधार तैयार किया।

- **आर्थिक राष्ट्रवाद:** दादाभाई नौरोजी, एम.जी. रानाडे और आर.सी. दत्त जैसे विचारकों ने सिद्ध किया कि भारत की गरीबी का मूल कारण 'धन का निष्कासन' है।
- **वि-औद्योगिकीकरण:** भारतीय दस्तकारों और बुनकरों की बर्बादी ने शहरी और ग्रामीण दोनों वर्गों को ब्रिटिश शासन के विरुद्ध कर दिया।
- **अकाल और कर:** बार-बार पड़ने वाले अकालों और भारी भू-राजस्व ने किसानों को उग्र राष्ट्रवाद की ओर धकेला।

### 3. पाश्चात्य शिक्षा और वैश्विक प्रभाव

अंग्रेजी शिक्षा का उद्देश्य 'काले अंग्रेज' पैदा करना था, लेकिन इसने भारतीयों के लिए आधुनिक उदारवादी विचारों के द्वार खोल दिए।

- **वैचारिक क्रांति:** बेंथम, मिल, रूसो और मैजिनी के विचारों ने शिक्षित भारतीयों में स्वतंत्रता, समानता और लोकतंत्र के प्रति ललक पैदा की।
- **संपर्क भाषा:** अंग्रेजी ने एक ऐसी भाषा का कार्य किया जिससे उत्तर और दक्षिण भारत के नेता आपस में संवाद कर सके।
- **अंतरराष्ट्रीय घटनाएँ:** इटली और जर्मनी का एकीकरण, आयरलैंड का स्वतंत्रता संग्राम और जापान की बढ़ती शक्ति ने भारतीयों के आत्मविश्वास को बढ़ाया।

#### 4. लॉर्ड लिटन की प्रतिक्रियावादी नीतियाँ (1876-80)

लॉर्ड लिटन के शासनकाल को "भारतीय राष्ट्रवाद का उत्प्रेरक" (Catalyst) कहा जाता है। उनकी गलतियों ने भारतीयों को संगठित होने पर मजबूर कर दिया।

1. **वर्नाकुलर प्रेस एक्ट (1878):** भारतीय भाषाओं के समाचार पत्रों पर प्रतिबंध लगाकर अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता छीन ली गई।
2. **भारतीय शस्त्र अधिनियम (1878):** भारतीयों के लिए बिना लाइसेंस हथियार रखना दंडनीय बनाया गया (नस्लीय भेदभाव)।
3. **ICS आयु सीमा:** परीक्षा में बैठने की अधिकतम आयु **21 से घटाकर 19 वर्ष** कर दी गई ताकि भारतीय इसमें शामिल न हो सकें।
4. **दिल्ली दरबार (1877):** जब दक्षिण भारत अकाल से मर रहा था, तब लिटन ने महारानी विक्टोरिया के लिए भव्य दरबार का आयोजन किया।

#### 5. विश्लेषण: राष्ट्रवाद—एक चेतना का विकास

भारतीय राष्ट्रवाद का उदय अचानक नहीं हुआ। यह ब्रिटिश शासन की 'प्रतिक्रिया' और आधुनिक शिक्षा की 'प्रेरणा' का मिश्रण था। लॉर्ड लिटन की नीतियों ने जहाँ भारतीयों को 'आंदोलित' किया, वहीं **इल्बर्ट बिल विवाद (1883)** ने उन्हें सिखाया कि संगठित होकर सरकार को झुकाया जा सकता है।

#### 6. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य: इल्बर्ट बिल विवाद** लॉर्ड रिपन के समय हुआ था, जिसने भारतीयों को यह दिखा दिया कि अंग्रेज कभी भी समानता का व्यवहार नहीं करेंगे।
- **तथ्य:** सुरेंद्रनाथ बनर्जी को 'भारतीय राष्ट्रवाद का जनक' (बिना मुकुट का राजा) कहा जाता है।
- **नोट:** राजपुताना (राजस्थान) की रियासतों में ब्रिटिश संधियों के कारण राष्ट्रवाद की लहर थोड़ी देर से पहुँची, लेकिन यहाँ के समाचार पत्रों (जैसे- राजपूताना गजट) ने चेतना जगाने में बड़ी भूमिका निभाई।
- **विरोधाभास:** अंग्रेजों का तर्क था कि भारत कभी एक राष्ट्र नहीं रहा, जबकि राष्ट्रवादियों ने वेदों और प्राचीन ग्रंथों के आधार पर 'सांस्कृतिक राष्ट्र' की अवधारणा प्रस्तुत की।

#### 7. संदर्भ तालिका (Quick Scan)

कारक	प्रमुख विशेषता	प्रभाव
पाश्चात्य शिक्षा	अंग्रेजी माध्यम	उदारवादी नेतृत्व का उदय।

धन का निष्कासन	दादाभाई नौरोजी	आर्थिक चेतना का विकास।
प्रेस एक्ट (1878)	लॉर्ड लिटन	समाचार पत्रों का दमन।
इल्बर्ट बिल	लॉर्ड रिपन	न्यायिक समानता की मांग।
रेलवे	परिवहन का साधन	भौगोलिक एकता और संवाद।

## अध्याय 7: कांग्रेस पूर्व स्थापित राजनैतिक संस्थाएं

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का उदय कोई आकस्मिक घटना नहीं थी। 19वीं सदी के मध्य से ही बंगाल, बॉम्बे और मद्रास में ऐसी संस्थाएं सक्रिय थीं, जिन्होंने जनता की समस्याओं को ब्रिटिश सरकार के समक्ष रखने का कार्य किया।

### 1. बंगाल प्रेसीडेंसी की संस्थाएं (राष्ट्रवाद का केंद्र)

बंगाल राजनैतिक चेतना का सबसे बड़ा केंद्र था। यहाँ संस्थाओं का विकास 'जमींदारी हितों' से शुरू होकर 'आम मध्यम वर्ग' तक पहुँचा।

- **बंगाल लैंडहोल्डर्स सोसाइटी (1838):** इसे 'जमींदारी एसोसिएशन' भी कहा जाता था। द्वारकानाथ टैगोर इसके मुख्य प्रणेता थे। यह भारत की **प्रथम राजनैतिक संस्था** थी, जिसका उद्देश्य जमींदारों के हितों की रक्षा करना था।
- **बंगाल ब्रिटिश इंडिया सोसाइटी (1843):** इसकी स्थापना जॉर्ज थॉम्पसन की सहायता से हुई। इसका उद्देश्य आम जनता की अवस्था की जानकारी सरकार तक पहुँचाना था।
- **ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन (1851):** यह उपरोक्त दोनों संस्थाओं के विलय से बनी। इसके अध्यक्ष **राधाकांत देव** और सचिव **देवेन्द्रनाथ टैगोर** थे। इसने 1853 के चार्टर एक्ट के समय भारतीयों के लिए विधायी परिषद की मांग की थी।
- **इंडियन लीग (1875):** शिशिर कुमार घोष द्वारा स्थापित। इसका उद्देश्य भारतीयों में राष्ट्रवाद की भावना जगाना था।
- **इंडियन एसोसिएशन ऑफ कलकत्ता (1876):** यह कांग्रेस से पूर्व की **सबसे महत्वपूर्ण संस्था** थी।
  - **संस्थापक:** सुरेन्द्रनाथ बनर्जी और आनंद मोहन बोस।
  - **कार्य:** इसने सिविल सेवा परीक्षा की आयु कम करने के विरोध में 'सिविल सर्विस आंदोलन' चलाया। इसे 'अखिल भारतीय स्तर' की संस्था बनाने का प्रथम प्रयास माना जाता है।

## 2. बॉम्बे प्रेसीडेंसी की संस्थाएं

बॉम्बे में राजनैतिक चेतना बंगाल के थोड़ा बाद लेकिन अधिक संतुलित तरीके से विकसित हुई।

- **बॉम्बे एसोसिएशन (1852):** दादाभाई नौरोजी के प्रयासों से स्थापित। इसने सरकार को भेदभावपूर्ण कानूनों के विरुद्ध ज्ञापन दिए।
- **पूना सार्वजनिक सभा (1870): महादेव गोविंद रानाडे (M.G. Ranade)** और जी.वी. जोशी द्वारा स्थापित। इसने सरकार और जनता के बीच 'सेतु' का कार्य किया। 1875 में इसने ब्रिटिश संसद को प्रत्यक्ष प्रतिनिधित्व की मांग हेतु याचिका भेजी थी।
- **बॉम्बे प्रेसीडेंसी एसोसिएशन (1885):** फिरोजशाह मेहता, के.टी. तैलंग और बदरुद्दीन तैयबजी (जिन्हें 'बॉम्बे के त्रिमूर्ति' कहा जाता था) द्वारा स्थापित।

## 3. मद्रास प्रेसीडेंसी की संस्थाएं

दक्षिण भारत में राजनैतिक गतिविधियाँ अन्य दो प्रेसीडेंसियों की तुलना में थोड़ी धीमी रहीं।

- **मद्रास नेटिव एसोसिएशन (1852):** गुजुलु लक्ष्मीनरसु चेट्टी द्वारा स्थापित। यह संस्था 1857 के विद्रोह के बाद प्रभावी नहीं रही।
- **मद्रास महाजन सभा (1884):** एम. वीर राघवाचारी, बी. सुब्रमण्यम अय्यर और पी. आनंद चार्लू द्वारा स्थापित। इसने स्थानीय प्रशासन में सुधारों की पुरजोर मांग की।

## 4. विदेशों में स्थापित संस्थाएं

- **लंदन इंडियन सोसाइटी (1865):** दादाभाई नौरोजी द्वारा लंदन में स्थापित।
- **ईस्ट इंडिया एसोसिएशन (1866):** दादाभाई नौरोजी द्वारा लंदन में। इसका उद्देश्य ब्रिटिश जनता को भारतीय समस्याओं से अवगत कराना था।

## 5. विश्लेषणात्मक विवरण (Analysis Box)

**विश्लेषण: 'कुलीन वर्ग' से 'मध्यम वर्ग' का संक्रमण**

19वीं सदी की प्रारंभिक संस्थाएं (जैसे लैंडहोल्डर्स सोसाइटी) केवल ऊँचे वर्गों के हितों तक सीमित थीं। लेकिन 1876 में **इंडियन एसोसिएशन** की स्थापना ने एक बड़ा मोड़ दिया। इसने पहली बार 'मध्यम वर्ग' और 'छात्रों' को राजनीति से जोड़ा। इन संस्थाओं ने ही कांग्रेस के लिए वह राजनैतिक बुनियादी ढांचा तैयार किया, जिस पर बाद में अखिल भारतीय आंदोलन खड़ा हुआ। RPSC परीक्षाओं में **सुरेन्द्रनाथ बनर्जी** की संस्था और **पूना सार्वजनिक सभा** के संस्थापकों पर विशेष बल दिया जाता है।

## 6. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य:** सुरेन्द्रनाथ बनर्जी को 'इंडियन एसोसिएशन' के कार्यों के कारण 1883 में जेल भेजा गया था, वे जेल जाने वाले पहले भारतीय पत्रकार/नेता थे।

- **तथ्य:** 1883 और 1885 में सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने 'भारतीय राष्ट्रीय सम्मेलन' (National Conference) का आयोजन किया, जिसका बाद में कांग्रेस में विलय हो गया।
- **नोट:** राजस्थान में भी इस दौरान छोटी-छोटी चेतनाएं जागृत हो रही थीं, लेकिन यहाँ की संस्थाएं (जैसे- परोपकारिणी सभा) सामाजिक सुधारों पर अधिक केंद्रित थीं।
- **विरोधाभास:** जहाँ बंगाल की संस्थाएं 'आंदोलनकारी' थीं, वहीं बॉम्बे की संस्थाएं अधिक 'कानूनी और वैधानिक' तरीकों पर विश्वास करती थीं।

## 7. त्वरित संदर्भ तालिका (Quick Scan)

संस्था का नाम	वर्ष	मुख्य संस्थापक	स्थान
लैंडहोल्डर्स सोसाइटी	1838	द्वारकानाथ टैगोर	कलकत्ता
ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन	1851	राधाकांत देव	कलकत्ता
पूना सार्वजनिक सभा	1870	एम.जी. रानाडे	पूना
इंडियन एसोसिएशन	1876	सुरेन्द्रनाथ बनर्जी	कलकत्ता
मद्रास महाजन सभा	1884	पी. आनंद चार्लू	मद्रास
ईस्ट इंडिया एसोसिएशन	1866	दादाभाई नौरोजी	लंदन

## अध्याय 8: भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस: स्थापना, सुरक्षा कपाट सिद्धांत एवं प्रारंभिक उद्देश्य

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC) की स्थापना 19वीं सदी के अंत में भारतीय राजनैतिक चेतना की पराकाष्ठा थी। इसने बिखरे हुए क्षेत्रीय आंदोलनों को एक 'अखिल भारतीय' मंच प्रदान किया।

### 1. स्थापना: समय, स्थान और प्रमुख व्यक्तित्व

कांग्रेस की स्थापना एक सेवानिवृत्त ब्रिटिश अधिकारी एलन ऑक्टेवियन ह्यूम (A.O. Hume) के प्रयासों से हुई थी।

- **प्रथम अधिवेशन:** 28 दिसंबर, 1885 को।
- **स्थान:** गोकुलदास तेजपाल संस्कृत कॉलेज, बॉम्बे।
  - **नोट:** यह अधिवेशन पहले पुणे में होना था, लेकिन वहाँ हैजा (Cholera) फैल जाने के कारण स्थान बदलकर बॉम्बे किया गया।
- **प्रथम अध्यक्ष:** व्योमेश चंद्र बनर्जी (W.C. Bonnerjee)।
- **प्रतिनिधि:** प्रथम अधिवेशन में कुल 72 प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। (RPSC का प्रिय तथ्य)।
- **महत्वपूर्ण अनुपस्थिति:** सुरेंद्रनाथ बनर्जी प्रथम अधिवेशन में शामिल नहीं थे, क्योंकि वे उसी समय कलकत्ता में 'इंडियन नेशनल कॉन्फ्रेंस' के दूसरे अधिवेशन की अध्यक्षता कर रहे थे।

### 2. 'सुरक्षा कपाट' (Safety Valve) सिद्धांत: एक विश्लेषण

कांग्रेस की स्थापना के पीछे ब्रिटिश सरकार के असली उद्देश्यों को लेकर दो प्रमुख विचारधाराएँ प्रचलित हैं:

#### A. सुरक्षा कपाट सिद्धांत (Safety Valve Theory)

- **प्रतिपादक:** लाला लाजपत राय (1916 में अपनी पुस्तक 'Young India' में)।
- **तर्क:** ह्यूम और तत्कालीन वायसराय लॉर्ड डफरिन ने कांग्रेस की स्थापना इसलिए करवाई ताकि 1857 जैसी किसी बड़ी जन-क्रांति को रोका जा सके। भारतीयों के बढ़ते असंतोष को बाहर निकालने के लिए कांग्रेस को एक 'सुरक्षा वाल्व' की तरह इस्तेमाल किया गया।
- **साक्ष्य:** ह्यूम के जीवनी लेखक विलियम वेडरबर्न ने भी इसका समर्थन किया है।

#### B. तड़ित चालक सिद्धांत (Lightning Conductor Theory)

- **प्रतिपादक:** गोपाल कृष्ण गोखले।
- **तर्क:** भारतीय नेताओं ने 'ह्यूम' को एक 'तड़ित चालक' की तरह इस्तेमाल किया। उन्हें डर था कि यदि भारतीय खुद ऐसी संस्था बनाएंगे, तो ब्रिटिश सरकार उसे तुरंत कुचल देगी। एक अंग्रेज (ह्यूम) के नेतृत्व में होने के कारण सरकार ने प्रारंभिक दौर में कांग्रेस पर कठोर दमन नहीं किया।

### 3. लॉर्ड डफरिन का दृष्टिकोण

प्रारंभ में डफरिन ने कांग्रेस के प्रति उदारता दिखाई, लेकिन जल्द ही उनके सुर बदल गए।

- **सूक्ष्म अल्पसंख्यक (Microscopic Minority):** डफरिन ने कांग्रेस का मजाक उड़ाते हुए इसे "जनता के एक सूक्ष्म अल्पसंख्यक वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाली संस्था" कहा।
- **गार्डन पार्टी:** 1886 के कलकत्ता अधिवेशन के समय डफरिन ने प्रतिनिधियों को एक 'गार्डन पार्टी' दी थी, लेकिन धीरे-धीरे सरकार ने कांग्रेस को 'राजद्रोह का कारखाना' मानना शुरू कर दिया।

#### 4. कांग्रेस के प्रारंभिक उद्देश्य एवं मांगें

प्रारंभिक दौर में कांग्रेस का दृष्टिकोण 'संवैधानिक' और 'क्रमिक सुधारों' वाला था।

1. **राजनैतिक एकता:** देश के विभिन्न हिस्सों के राजनैतिक कार्यकर्ताओं के बीच मित्रता और भाईचारे को बढ़ावा देना।
2. **लोकतांत्रिक आधार:** जाति, धर्म और प्रांत के भेदभाव के बिना राष्ट्रीय एकता की भावना विकसित करना।
3. **प्रमुख मांगें:**
  - केंद्रीय और प्रांतीय विधायी परिषदों का विस्तार।
  - प्रशासनिक सेवाओं (ICS) का भारतीयकरण और परीक्षा का भारत में आयोजन।
  - सैन्य खर्च में कटौती और न्यायिक शक्तियों का कार्यपालिका से पृथक्करण।
  - नमक कर (Salt Tax) में कमी।

#### 5. विश्लेषणात्मक विवरण (Analysis Box)

**विश्लेषण: ह्यूम—विवाद और वास्तविकता**

ए.ओ. ह्यूम को अक्सर 'कांग्रेस का पिता' कहा जाता है, लेकिन यह समझना महत्वपूर्ण है कि वे केवल एक सूत्रधार थे। असली शक्ति वह 'शिक्षित मध्यम वर्ग' था जो 1870 के दशक से ही संगठित हो रहा था। 'सेफ्टी वाल्व' सिद्धांत राजनैतिक रूप से आकर्षक हो सकता है, लेकिन आधुनिक इतिहासकार (जैसे बिपन चंद्रा) मानते हैं कि कांग्रेस का जन्म भारतीय राष्ट्रीय चेतना की 'स्वाभाविक परिणति' थी। RPSC परीक्षाओं में **सुरेंद्रनाथ बनर्जी की अनुपस्थिति** और **पुणे से बॉम्बे स्थान परिवर्तन** के कारणों पर रक्षात्मक उत्तर तैयार रखने चाहिए।

#### 6. महत्वपूर्ण तथ्य एवं विरोधाभास (Important Notes)

- **तथ्य:** कांग्रेस के प्रथम चार अध्यक्षों की विविधता (हिंदू, ईसाई, मुस्लिम, पारसी) इसकी धर्मनिरपेक्ष प्रकृति को सिद्ध करती है। (W.C. बनर्जी, दादाभाई नौरोजी, बदरुद्दीन तैयबजी, जॉर्ज यूल)।
- **तथ्य:** 'भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस' नाम का सुझाव **दादाभाई नौरोजी** ने दिया था (इससे पहले इसका नाम 'भारतीय राष्ट्रीय संघ' प्रस्तावित था)।
- **नोट:** राजस्थान की रियासतों के प्रतिनिधि भी धीरे-धीरे कांग्रेस से जुड़ने लगे, लेकिन आधिकारिक रूप से 'राजपुताना मध्य भारत सभा' जैसे संगठनों ने यहाँ कांग्रेस के संदेश को पहुँचाया।
- **विरोधाभास:** डफरिन ने बाद में कांग्रेस को 'गंदी और राजद्रोही' संस्था कहा, जबकि ह्यूम अंत तक इसके महासचिव बने रहे।

wincompete

## 7. संदर्भ तालिका (Quick Scan)

वर्ष	स्थान	अध्यक्ष	विशेष तथ्य
1885	बॉम्बे	W.C. बनर्जी	प्रथम अधिवेशन, 72 प्रतिनिधि।
1886	कलकत्ता	दादाभाई नौरोजी	इंडियन नेशनल कॉन्फ्रेंस का विलय।
1887	मद्रास	बदरुद्दीन तैयबजी	प्रथम मुस्लिम अध्यक्ष।
1888	इलाहाबाद	जॉर्ज यूल	प्रथम अंग्रेज (यूरोपीय) अध्यक्ष।

wincompete

## अध्याय 9: उदारवादी चरण (1885-1905): नेता, कार्यप्रणाली एवं उपलब्धियां

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के पहले बीस वर्षों को 'उदारवादी' या 'नरमपंथी' राजनीति के युग के रूप में जाना जाता है। इस काल के नेता मध्यम वर्गीय बुद्धिजीवी थे, जो ब्रिटिश न्यायप्रियता में अटूट विश्वास रखते थे।

### 1. प्रमुख उदारवादी नेता (The Leaders)

इस चरण का नेतृत्व उन लोगों ने किया जो पाश्चात्य शिक्षा और उदारवादी मूल्यों से गहराई से प्रभावित थे।

- **दादाभाई नौरोजी:** 'भारत के वयोवृद्ध पुरुष' (Grand Old Man of India)। इन्होंने ब्रिटेन में भारतीय पक्ष रखने हेतु 'ईस्ट इंडिया एसोसिएशन' बनाई।
- **गोपाल कृष्ण गोखले:** महात्मा गांधी के राजनैतिक गुरु। इन्होंने 'सर्वेंट्स ऑफ इंडिया सोसाइटी' (1905) की स्थापना की।
- **फिरोजशाह मेहता:** 'बॉम्बे का शेर' के नाम से प्रसिद्ध। इन्होंने 'बॉम्बे क्रॉनिकल' समाचार पत्र निकाला।
- **सुरेंद्रनाथ बनर्जी:** 'इंडियन एसोसिएशन' के संस्थापक। इन्होंने सिविल सेवा के भारतीयकरण हेतु संघर्ष किया।
- **न्यायमूर्ति महादेव गोविंद रानाडे:** 'पश्चिम भारत के सुकरात' कहे जाते थे।

### 2. कार्यप्रणाली: '3Ps' की नीति (Methodology)

उदारवादियों की राजनीति 'संवैधानिक आंदोलन' की परिधि में थी। उनका मानना था कि अंग्रेज मूलतः न्यायप्रिय हैं और यदि उन्हें सही तथ्य दिए जाएं, तो वे सुधार करेंगे। उनकी पद्धति को '3Ps' कहा गया:

1. **प्रार्थना (Prayers):** सरकार को ज्ञापन सौंपना।
  2. **याचिका (Petitions):** संवैधानिक तरीकों से सुधारों की मांग करना।
  3. **विरोध (Protests):** शांतिपूर्ण सभाओं और लेखों के माध्यम से विरोध दर्ज करना।
- **लंदन में प्रचार:** इन्होंने 1889 में 'ब्रिटिश कमेटी ऑफ इंडिया' बनाई और 'इंडिया' नामक पत्रिका निकाली ताकि ब्रिटिश जनता का समर्थन प्राप्त किया जा सके।

### 3. प्रमुख उपलब्धियां और सुधार

उदारवादी चरण को अक्सर "राजनैतिक भिक्षावृत्ति" कहकर आलोचना की जाती है, लेकिन इसकी उपलब्धियां महत्वपूर्ण थीं:

- **भारतीय परिषद अधिनियम, 1892 (Indian Councils Act 1892):** यह उदारवादियों की सबसे बड़ी राजनैतिक विजय थी।
  - इसके तहत केंद्रीय और प्रांतीय परिषदों में अतिरिक्त सदस्यों की संख्या बढ़ाई गई।
  - परिषदों को **बजट पर चर्चा करने** और प्रश्न पूछने का अधिकार मिला (यद्यपि मतदान का अधिकार नहीं था)।
  - अप्रत्यक्ष निर्वाचन पद्धति की शुरुआत हुई।
- **आर्थिक आलोचना:** इन्होंने 'धन के निष्कासन' के सिद्धांत को जन-जन तक पहुँचाया। इनके दबाव के कारण ब्रिटिश सरकार ने 1895 में '**वेलबी आयोग**' (Welby Commission) की नियुक्ति की ताकि भारतीय व्यय की जाँच की जा सके।
- **प्रशासनिक मार्गें:** सिविल सेवा परीक्षा भारत में आयोजित करने की मांग को स्वीकार करवाने में आंशिक सफलता।

# STRUCTURAL CHANGES IN LEGISLATIVE COUNCILS: 1861 vs. 1892 ACTS

## INDIAN COUNCILS ACT, 1861



**IMPERIAL LEGISLATIVE COUNCIL**

**OFFICIAL MAJORITY MAINTAINED**



**TOTAL MEMBERS: 6-12 (ADDITIONAL)**



**PROVINCIAL COUNCILS**



**NOMINATED MEMBERS**

- NOMINATION OF NON-OFFICIALS BY VICEROY/GOVERNOR
- NO POWER TO DISCUSS BUDGET OR ASK QUESTIONS
- LIMITED REPRESENTATION



## INDIAN COUNCILS ACT, 1892



**IMPERIAL LEGISLATIVE COUNCIL**

**LIMITED INDIRECT ELECTION (RECOMMENDATIONS)**



**TOTAL MEMBERS INCREASED: 10-16 (ADDITIONAL)**

**NEW RIGHTS GIVEN**

- LIMITED INDIRECT ELECTION TO PROVINCIAL COUNCILS
- RIGHT TO DISCUSS BUDGET (NO VOTING)

**BEGINNING OF ELECTIVE ELEMENT**

- RIGHT TO ASK QUESTIONS (ON MATTERS OF PUBLIC INTEREST)
- STILL OFFICIAL MAJORITY



## 4. विश्लेषण: उदारवादियों का ऐतिहासिक मूल्यांकन

उदारवादियों की सबसे बड़ी सफलता यह थी कि उन्होंने भारतीय राजनीति को एक 'अखिल भारतीय' स्वरूप दिया। उन्होंने अंग्रेजों के 'लोक-कल्याणकारी' होने के मुखौटे को उतार दिया और यह सिद्ध किया कि ब्रिटिश शासन भारत की गरीबी का मुख्य कारण है। यद्यपि वे स्वराज प्राप्त नहीं कर सके, लेकिन उन्होंने वह 'बौद्धिक आधार' तैयार किया जिस पर भविष्य के आंदोलनों की इमारत खड़ी हुई। RPSC परीक्षाओं में अक्सर **1892 के अधिनियम की विशेषताओं** और **वेलबी आयोग** पर प्रश्न पूछे जाते हैं।

## 5. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य:** दादाभाई नौरोजी 1892 में ब्रिटिश संसद (House of Commons) के लिए चुने जाने वाले **प्रथम भारतीय** थे।
- **तथ्य:** 1890 के कलकत्ता अधिवेशन को संबोधित करने वाली पहली महिला स्नातक **कादम्बिनी गांगुली** थीं।
- **नोट:** उदारवादियों का आंदोलन शहरी शिक्षित मध्यम वर्ग तक सीमित था; वे आम जनता (किसानों और मजदूरों) को बड़े पैमाने पर जोड़ने में विफल रहे।
- **विरोधाभास:** उग्रवादी नेता बाल गंगाधर तिलक ने उदारवादियों की कार्यप्रणाली को "राजनैतिक भिक्षावृत्ति" (Political Mendicancy) कहा था।

## 6. संदर्भ तालिका (Quick Scan)

विशेषता	उदारवादी चरण (1885-1905)
मुख्य दर्शन	ब्रिटिश न्यायप्रियता में विश्वास और क्रमिक सुधार।
राजनैतिक साधन	संवैधानिक साधन (3Ps)।
बड़ा योगदान	आर्थिक राष्ट्रवाद और 1892 का परिषद अधिनियम।
प्रमुख मांग	बजट पर बहस और सिविल सेवा का भारतीयकरण।
सीमा	जन-आंदोलन का अभाव और मध्यम वर्गीय चरित्र।

## अध्याय 10: उग्र राष्ट्रवाद का उदय: लाल-बाल-पाल एवं वैचारिक परिवर्तन

20वीं सदी के प्रारंभ में कांग्रेस के भीतर एक नए और युवा नेतृत्व का उदय हुआ, जिसे 'उग्रवादी' या 'गरमपंथी' कहा गया। इनके लिए स्वराज कोई 'रियायत' नहीं, बल्कि 'अधिकार' था।

### 1. उग्र राष्ट्रवाद के उदय के कारण

उदारवादियों की विफलताओं और ब्रिटिश सरकार की दमनकारी नीतियों ने इस वैचारिक परिवर्तन की नींव रखी:

- **अंतरराष्ट्रीय प्रभाव:** 1896 में इथियोपिया द्वारा इटली की हार और 1905 में **जापान द्वारा रूस की पराजय** ने "यूरोपीय अजेयता" के मिथक को तोड़ दिया।
- **उदारवादियों की विफलता:** 1892 के परिषद अधिनियम से जनता संतुष्ट नहीं थी। तिलक ने कहा— "साल में एक बार मेंढक की तरह टरनि से कुछ हासिल नहीं होगा।"
- **कर्जन की प्रतिक्रियावादी नीतियाँ:** लॉर्ड कर्जन के दमनकारी कार्यों (जैसे- कलकत्ता कॉर्पोरेशन एक्ट, यूनिवर्सिटी एक्ट) ने आग में घी का काम किया।

### 2. लॉर्ड कर्जन और बंगाल विभाजन (1905)

यह उग्र राष्ट्रवाद के उदय की सबसे तात्कालिक घटना थी।

- **निर्णय की घोषणा:** 20 जुलाई, 1905 को।
- **प्रभावी तिथि: 16 अक्टूबर, 1905** (इसे पूरे बंगाल में 'शोक दिवस' के रूप में मनाया गया)।
- **ब्रिटिश तर्क:** प्रशासनिक सुविधा।
- **वास्तविक उद्देश्य:** बंगाल (जो राष्ट्रवाद का केंद्र था) को धार्मिक आधार पर विभाजित कर एकता को तोड़ना।

### 3. स्वदेशी एवं बहिष्कार आंदोलन

विभाजन के विरोध में 7 अगस्त, 1905 को कलकत्ता के टाउन हॉल में स्वदेशी आंदोलन की घोषणा हुई।

- **बहिष्कार (Boycott):** विदेशी वस्तुओं (विशेषकर मैनचेस्टर के कपड़े और लिवरपूल के नमक) का बहिष्कार और उनकी होली जलाना।
- **स्वदेशी:** स्वदेशी उद्योगों, साबुनों, और माचिस फैक्ट्रियों की स्थापना।
- **आत्मशक्ति:** रवींद्रनाथ टैगोर ने 'आमार सोनार बांग्ला' गीत लिखा और रक्षाबंधन को एकता के प्रतीक के रूप में इस्तेमाल किया।

### 4. लाल-बाल-पाल: नेतृत्व की त्रिमूर्ति

उग्रवादी चरण के तीन प्रमुख स्तंभ थे:

1. **लाला लाजपत राय (लाल):** 'पंजाब केसरी'। इन्होंने 'द पंजाबी' और 'वंदे मातरम' (उर्दू) पत्र निकाले।
2. **बाल गंगाधर तिलक (बाल):** 'लोकमान्य'। इन्होंने कहा— "**स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा।**" इन्होंने 'केसरी' (मराठी) और 'मराठा' (अंग्रेजी) पत्र निकाले।
3. **विपिन चंद्र पाल (पाल):** बंगाल में उग्र राष्ट्रवाद के प्रचारक। इन्होंने 'न्यू इंडिया' पत्रिका निकाली।
- **अरविंद घोष:** इनके वैचारिक गुरु। इन्होंने 'पैसिव रेजिस्टेंस' (निष्क्रिय प्रतिरोध) का सिद्धांत दिया।

## 5. उदारवादी बनाम उग्रवादी: वैचारिक तुलना

बिंदु	उदारवादी (Moderates)	उग्रवादी (Extremists)
लक्ष्य	ब्रिटिश साम्राज्य के भीतर स्वशासन।	पूर्ण स्वतंत्रता / स्वराज।
साधन	संवैधानिक तरीके (याचिका, बहस)।	बहिष्कार, स्वदेशी और निष्क्रिय प्रतिरोध।
विश्वास	ब्रिटिश न्यायप्रियता में अटूट विश्वास।	अंग्रेजों की नियति केवल शोषण है।
आधार	शहरी शिक्षित मध्यम वर्ग।	शिक्षित वर्ग के साथ आम जनता और युवा।

## 6. विश्लेषण: 'स्वराज' की नई परिभाषा

उग्रवादियों ने भारतीय राजनीति में 'त्याग और कष्ट' को एक नया मूल्य प्रदान किया। तिलक ने गणेश उत्सव और शिवाजी उत्सव के माध्यम से धर्म को राष्ट्रवाद से जोड़ा, जिससे आम जनता आंदोलन से जुड़ सकी। यद्यपि 1907 के **सूरत विभाजन** में कांग्रेस दो हिस्सों में बंट गई, लेकिन उग्रवादियों ने यह स्पष्ट कर दिया कि स्वतंत्रता 'मांगने' से नहीं, 'लड़ने' से मिलेगी। RPSC परीक्षाओं में अक्सर **बंगाल विभाजन की तिथि** और **तिलक के समाचार पत्रों** पर प्रश्न पूछे जाते हैं।

## 7. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य:** तिलक ने 1893 में **गणपति उत्सव** और 1895 में **शिवाजी उत्सव** की शुरुआत की।
- **तथ्य:** वैंलेटाइन शिरोल ने तिलक को '**भारतीय अशांति का जनक**' (Father of Indian Unrest) कहा था।
- **नोट:** स्वदेशी आंदोलन के दौरान बंगाल में 'राष्ट्रीय शिक्षा परिषद' की स्थापना हुई।
- **विरोधाभास:** उदारवादी आंदोलन को केवल बंगाल तक सीमित रखना चाहते थे, जबकि उग्रवादी इसे पूरे भारत में फैलाना चाहते थे।

## 8. संदर्भ तालिका (Quick Scan)

घटना / शब्द	विवरण	परीक्षा महत्व
16 अक्टूबर 1905	बंगाल विभाजन प्रभावी।	शोक दिवस / राखी दिवस।
केसरी और मराठा	तिलक के समाचार पत्र।	भाषा संबंधी प्रश्न (मराठी/अंग्रेजी)।
सूरत विभाजन	1907 में कांग्रेस का बंटवारा।	अध्यक्ष: रासबिहारी घोष।
आत्मशक्ति	स्वदेशी का वैचारिक आधार।	आत्मनिर्भरता पर बल।

wincompete

# आधुनिक भारत में बौद्धिक जागृति

## अध्याय 11: पाश्चात्य उदारवाद का प्रभाव एवं भारतीय बुद्धिजीवी वर्ग

19वीं शताब्दी का 'भारतीय पुनर्जागरण' केवल धार्मिक सुधारों तक सीमित नहीं था, बल्कि यह एक गहरी बौद्धिक क्रांति थी। इस क्रांति के मूल में यूरोपीय उदारवाद और भारतीय परंपराओं का द्वंद्वत्मक मिलन था।

### 1. पाश्चात्य उदारवाद के मूल तत्व और भारतीय ग्राह्यता

यूरोपीय पुनर्जागरण और प्रबोधन (Enlightenment) के विचारों ने भारतीय बुद्धिजीवियों को 'तर्क' (Reason) की शक्ति से परिचित कराया।

- **प्रमुख विचार:** स्वतंत्रता (Liberty), समानता (Equality), बंधुत्व (Fraternity) और कानून का शासन।
- **प्रमुख विचारक:** भारतीयों ने **जेरेमी बेंथम** (उपयोगितावाद), **जॉन स्टुअर्ट मिल** (व्यक्तिगत स्वतंत्रता), **वाल्टेयर** और **रूसो** के साहित्य का गहराई से अध्ययन किया।
- **वैज्ञानिक दृष्टिकोण:** मध्यकालीन अंधविश्वासों के स्थान पर 'कार्य-कारण संबंध' (Cause and Effect) को समझने की ललक पैदा हुई।

### 2. राजा राममोहन राय: आधुनिक भारत के प्रथम बौद्धिक पथप्रदर्शक

राजा राममोहन राय को 'आधुनिक भारत का जनक' और 'भारतीय पुनर्जागरण का अग्रदूत' कहा जाता है। उन्होंने पाश्चात्य उदारवाद को भारतीय उपनिषदों के साथ जोड़कर एक नई वैचारिक दृष्टि दी।

- **एकेश्वरवाद (Monotheism):** 1809 में उन्होंने फारसी में 'तुहफत-उल-मुवाहिद्दीन' (एकेश्वरवादियों को उपहार) लिखी, जिसमें उन्होंने तर्क दिया कि सभी धर्मों का मूल एक ही ईश्वर की सत्ता में है।
- **तर्कवाद (Rationalism):** उनका मानना था कि यदि कोई धार्मिक परंपरा तर्क की कसौटी पर खरी नहीं उतरती, तो उसे त्याग देना चाहिए, चाहे वह कितनी भी प्राचीन क्यों न हो।
- **वैश्विक नागरिकता:** वे पहले भारतीय थे जिन्होंने अंतरराष्ट्रीय आंदोलनों (जैसे- स्पेन और नेपल्स की क्रांतियाँ) का समर्थन किया। उनके लिए 'स्वतंत्रता' एक अविभाज्य वैश्विक मूल्य था।

### 3. भारतीय बुद्धिजीवी वर्ग (The New Intelligentsia)

अंग्रेजी शिक्षा ने भारत में एक ऐसे वर्ग को जन्म दिया जो अपनी जड़ों से जुड़ा था लेकिन जिसकी दृष्टि वैश्विक थी।

- **कलकत्ता का मध्यम वर्ग:** इसमें शिक्षक, वकील, पत्रकार और डॉक्टर शामिल थे। इन्हें 'भद्रलोक' कहा गया।
- **यंग बंगाल मूवमेंट (Young Bengal Movement):** हेनरी विवियन डेरोजियो (Henry Vivian Derozio) के नेतृत्व में युवाओं ने पुरानी रूढ़ियों को चुनौती दी। उन्हें 'आधुनिक भारत का प्रथम राष्ट्रवादी कवि' माना जाता है।
- **संवाद और पत्र-पत्रिकाएँ:** राजा राममोहन राय की 'संवाद कौमुदी' (बंगाली) और 'मिरात-उल-अखबार' (फारसी) ने जनमानस में राजनैतिक और सामाजिक चेतना का संचार किया।

#### 4. यूरोपीय साहित्य का प्रभाव

- **उदारवादी साहित्य:** थॉमस पेन की 'Rights of Man' और बेंथम के 'उपयोगितावाद' ने भारतीय नेताओं को ब्रिटिश नीतियों की विसंगतियों को समझने का आधार दिया।
- **इतिहास लेखन:** ओरिएंटलिस्टों (जैसे सर विलियम जोन्स) द्वारा भारतीय गौरवपूर्ण इतिहास की पुनर्खोज ने भारतीयों में 'हीन भावना' को समाप्त कर आत्मविश्वास का संचार किया।

#### 5. विश्लेषण: 'उदारवाद'—क्रांति का मूक आधार

19वीं सदी की बौद्धिक जागृति ने ही 20वीं सदी के राष्ट्रीय आंदोलन को भाषा और तर्क दिए। राजा राममोहन राय द्वारा स्थापित '**आत्मीय सभा**' (1815) और '**ब्रह्म समाज**' (1828) केवल धार्मिक संस्थाएँ नहीं थीं, बल्कि वे 'बौद्धिक प्रयोगशालाएँ' थीं जहाँ मानवाधिकारों और सामाजिक न्याय पर चर्चा होती थी। RPSC परीक्षाओं में अक्सर **राजा राममोहन राय की उपाधियों** और उनके **फारसी/बंगाली ग्रंथों** पर प्रश्न पूछे जाते हैं। यह जागृति ही थी जिसने सिद्ध किया कि भारत को केवल राजनैतिक ही नहीं, बल्कि 'मानसिक' स्वतंत्रता की भी आवश्यकता है।

#### 6. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य:** मुगल सम्राट अकबर द्वितीय ने राममोहन राय को '**राजा**' की उपाधि दी थी और उन्हें अपना दूत बनाकर इंग्लैंड भेजा था।
- **तथ्य:** राममोहन राय ने 1817 में डेविड हेयर के साथ मिलकर कलकत्ता में '**हिंदू कॉलेज**' की स्थापना की।
- **नोट:** राजस्थान में भी इस बौद्धिक जागृति का प्रभाव स्वामी दयानंद सरस्वती के माध्यम से पहुँचा, जिन्होंने तर्क और वेदों के समन्वय पर बल दिया।
- **विरोधाभास:** जहाँ पाश्चात्य उदारवाद ने भारतीयों को जागरूक किया, वहीं इसी उदारवाद का उपयोग अंग्रेजों ने अपनी संस्कृति को श्रेष्ठ और भारतीय संस्कृति को पिछड़ा दिखाने के लिए भी किया (मैकाले का दृष्टिकोण)।

#### 7. संदर्भ तालिका (Quick Scan)

व्यक्ति / संस्था	विशेष कार्य / विचार	परीक्षा महत्व
राजा राममोहन राय	एकेश्वरवाद / सती प्रथा विरोध	भारतीय पुनर्जागरण के जनक।
हेनरी विवियन डेरोजियो	यंग बंगाल आंदोलन	क्रांतिकारी और राष्ट्रवादी सोच।

मिरात-उल-अखबार	फारसी समाचार पत्र	राममोहन राय द्वारा संचालित।
डेविड हेयर	हिंदू कॉलेज की स्थापना	पाश्चात्य शिक्षा का प्रसार।
बेंथम / मिल	यूरोपीय उदारवादी	भारतीय बुद्धिजीवियों के प्रेरणा स्रोत।



wincompete

## अध्याय 12: 19वीं सदी का साहित्यिक पुनर्जागरण

19वीं सदी का साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं था, बल्कि वह ब्रिटिश दमन के विरुद्ध एक 'बौद्धिक हथियार' था। इस काल में साहित्य 'दरबारों' से निकलकर 'जनता' के बीच पहुँचा और भक्ति के स्थान पर 'देशभक्ति' काव्य का मुख्य स्वर बनी।

### 1. बंगाली साहित्य: राष्ट्रवाद की गंगोत्री

बंगाल आधुनिक साहित्यिक चेतना का केंद्र था। यहाँ के लेखकों ने पहली बार 'स्वदेश' की संकल्पना को सांस्कृतिक गरिमा प्रदान की।

- **बंकिम चंद्र चटर्जी:** उन्हें 'ऋषि' की उपाधि दी गई।
  - **आनंदमठ (1882):** यह उपन्यास 'सन्यासी विद्रोह' पर आधारित है। इसी उपन्यास में अमर गीत 'वंदे मातरम' सम्मिलित है, जो आगे चलकर भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का मंत्र बना।
  - **सांस्कृतिक प्रभाव:** उन्होंने भारतीय अतीत को गौरवशाली रूप में प्रस्तुत किया ताकि भारतीयों में हीन भावना समाप्त हो सके।
- **दीनबंधु मित्र:** उनके नाटक 'नील दर्पण' (1860) ने नील की खेती करने वाले किसानों के शोषण को उजागर किया। इस नाटक ने अंग्रेजी सत्ता की नींव हिला दी और किसानों के प्रति सहानुभूति की एक लहर पैदा की।
- **माइकल मधुसूदन दत्त:** इन्होंने बंगाली काव्य में 'अमृताक्षर छंद' और पाश्चात्य शैलियों का समावेश किया।

### 2. हिंदी साहित्य: भारतेन्दु हरिश्चंद्र और आधुनिकता का उदय

हिंदी साहित्य में 19वीं सदी के उत्तरार्ध को 'भारतेन्दु युग' कहा जाता है। उन्होंने हिंदी को 'ब्रजभाषा' की जड़ता से निकालकर 'खड़ी बोली' की आधुनिकता की ओर मोड़ा।

- **भारतेन्दु हरिश्चंद्र (1850-1885):** \* **भारत दुर्दशा (1880):** इस नाटक में उन्होंने प्रत्यक्ष रूप से ब्रिटिश शासन द्वारा भारत के आर्थिक और नैतिक पतन का चित्रण किया।
  - **अंधेर नगरी:** एक व्यंग्य के माध्यम से उन्होंने तत्कालीन प्रशासन की अराजकता पर चोट की।
  - **निज भाषा उन्नति अहै:** उन्होंने स्वदेशी भाषा के बिना सर्वांगीण उन्नति को असंभव बताया।
- **प्रतापनारायण मिश्र एवं बद्रीनारायण 'प्रेमघन':** इन्होंने भारतेन्दु की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए देशप्रेम और समाज सुधार पर लेख लिखे।

### 3. क्षेत्रीय साहित्य और राष्ट्रीय चेतना

भारत के विभिन्न हिस्सों में क्षेत्रीय भाषाओं ने राष्ट्रवाद को 'लोकप्रिय' बनाया।

- **मराठी साहित्य:** \* **विष्णु शास्त्री चिपलूनकर:** इनके 'निबंधमाला' ने मराठी समाज में जागृति पैदा की।
  - **बाल गंगाधर तिलक:** इनके 'केसरी' और 'मराठा' के लेखों ने साहित्य को सीधा राजनैतिक सक्रियता से जोड़ दिया।
- **उर्दू साहित्य:** \* **मिर्जा गालिब:** इन्होंने 1857 के बाद के दिल्ली के संकट को अपनी गजलों और खतों में पिरोया।
  - **अल्ताफ हुसैन हाली:** इनकी 'मुसद्दस-ए-हाली' ने मुस्लिम समाज में शिक्षा और आधुनिकता के प्रति चेतना जगाई।

- **तमिल साहित्य:** \* 19वीं सदी के अंत में **सुब्रमण्य भारती** (यद्यपि उनका मुख्य कार्य 20वीं सदी में था) की पूर्वपीठिका तैयार हुई, जिन्होंने तमिल अस्मिता को राष्ट्रवाद से जोड़ा।

---

#### 4. साहित्य का राष्ट्रीय चेतना में योगदान: प्रमुख आयाम

1. **आर्थिक शोषण का अनावरण:** साहित्य ने 'धन के निष्कासन' (Drain of Wealth) के गूढ़ आर्थिक सिद्धांतों को कविताओं और नाटकों के माध्यम से आम जनता को समझाया।
2. **अतीत का महिमामंडन:** राजपूत, मराठा और सिख वीरों की शौर्य गाथाओं को पुनः लिखकर भारतीयों में स्वाभिमान जगाया गया।
3. **सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार:** साहित्य ने सती प्रथा, बाल विवाह और जातिवाद के विरुद्ध एक वैचारिक युद्ध लड़ा।
4. **साझा शत्रु की पहचान:** साहित्य ने यह स्थापित किया कि भारत की सभी समस्याओं की जड़ ब्रिटिश औपनिवेशिक सत्ता है।

---

#### 5. विश्लेषण: साहित्य—एक मूक जन-आंदोलन

19वीं सदी का साहित्य केवल कागज पर काली स्याही नहीं थी, बल्कि यह वह 'पेट्रोल' था जिसने राष्ट्रवाद की मशाल को जलाए रखा। जब राजनैतिक संस्थाएं (जैसे कांग्रेस) अभी शैशवावस्था में थीं, तब साहित्य ने 'भारत माता' की छवि को जनमानस के हृदय में स्थापित कर दिया था। **'वंदे मातरम'** ने वह काम किया जो हजारों भाषण नहीं कर सकते थे। RPSC परीक्षाओं में अक्सर **'नील दर्पण'** के लेखक और **भारतेन्दु की कृतियों** के माध्यम से तत्कालीन राजनैतिक स्थिति पर प्रश्न पूछे जाते हैं।

---

#### 6. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य:** बंकिम चंद्र चटर्जी ने **'बंगदर्शन'** नामक पत्रिका निकाली, जिसने बंगाली गद्य को नया रूप दिया।
- **तथ्य:** 'नील दर्पण' का अंग्रेजी अनुवाद **माइकल मधुसूदन दत्त** ने किया था और इसे पादरी **जेम्स लॉन्ग** ने प्रकाशित किया, जिसके लिए उन्हें जेल जाना पड़ा।
- **नोट:** राजस्थान में भी इस दौरान **सूर्यमल मिश्रण** (वीर सतसई) जैसे कवियों ने अपनी लेखनी से स्वतंत्रता और शौर्य की अलख जगाई।
- **विरोधाभास:** जहाँ कई लेखक अंग्रेजों की 'न्यायप्रियता' के प्रशंसक थे (प्रारंभिक दौर में), वहीं 1870 के बाद साहित्य का स्वर पूरी तरह से ब्रिटिश विरोधी और विद्रोही हो गया।

## 7. संदर्भ तालिका (Quick Scan)

कृति	लेखक	भाषा	मुख्य विषय
आनंदमठ	बंकिम चंद्र चटर्जी	बंगाली	सन्यासी विद्रोह / वंदे मातरम।
भारत दुर्दशा	भारतेन्दु हरिश्चंद्र	हिंदी	ब्रिटिश काल में भारत का पतन।
नील दर्पण	दीनबंधु मित्र	बंगाली	नील किसानों का शोषण।
निबंधमाला	विष्णु शास्त्री चिपलूनकर	मराठी	सामाजिक-सांस्कृतिक पुनर्जागरण।
मुसद्दस	अल्लाफ हुसैन हाली	उर्दू	मुस्लिम समाज का सुधार।

wincompete

## अध्याय 13: कानूनी चेतना एवं नागरिक अधिकारों की मांग का विकास

19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में पश्चिमी शिक्षा प्राप्त भारतीय बुद्धिजीवियों ने ब्रिटिश 'कानून के शासन' (Rule of Law) की अवधारणा को उन्हीं के विरुद्ध चुनौती के रूप में इस्तेमाल करना शुरू किया। यह काल संवैधानिक अधिकारों की लड़ाई का प्रारंभिक युग था।

### 1. कानूनी चेतना का उदय: शिक्षा से अधिकारों तक

ब्रिटिश शासन ने भारत में एक नई न्यायिक व्यवस्था और कानूनी शिक्षा की शुरुआत की।

- **वकीलों का उदय:** भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के अधिकांश प्रारंभिक नेता (जैसे- एम.जी. रानाडे, फिरोजशाह मेहता, दादाभाई नौरोजी) कानून के ज्ञाता थे। उन्होंने अदालतों को राजनैतिक जागरूकता के मंच के रूप में इस्तेमाल किया।
- **समानता की मांग:** भारतीयों ने तर्क दिया कि यदि ब्रिटिश शासन 'विधि के शासन' पर आधारित है, तो भारतीयों और अंग्रेजों के लिए कानून अलग-अलग क्यों होने चाहिए?

### 2. इल्बर्ट बिल विवाद (1883): नस्लीय भेदभाव की पराकाष्ठा

यह विवाद लॉर्ड रिपन के कार्यकाल में हुआ और इसने भारतीय राष्ट्रवाद को संगठित होने का सबसे बड़ा सबक दिया।

- **विधेयक का उद्देश्य:** तत्कालीन वायसराय लॉर्ड रिपन की परिषद के सदस्य **सी.पी. इल्बर्ट** ने एक बिल पेश किया, जिसका उद्देश्य भारतीय जिला मजिस्ट्रेटों और सत्र न्यायाधीशों को यूरोपीय अपराधियों के मामलों की सुनवाई करने का अधिकार देना था।
- **श्वेत विद्रोह (White Mutiny):** भारत में रहने वाले अंग्रेजों और यूरोपीय समुदाय ने इस बिल का हिंसक विरोध किया। उनका तर्क था कि "एक काला न्यायाधीश किसी गोरे व्यक्ति का न्याय नहीं कर सकता।"
- **परिणाम:** भारी दबाव के कारण सरकार को बिल वापस लेना पड़ा और संशोधन करना पड़ा।
- **सीख:** इस विवाद ने भारतीयों को सिखाया कि यदि अंग्रेज संगठित होकर सरकार को झुका सकते हैं, तो भारतीयों को भी अपने अधिकारों के लिए एक अखिल भारतीय संगठन (जो बाद में कांग्रेस बना) की आवश्यकता है।

### 3. नागरिक अधिकार और प्रेस की स्वतंत्रता

भारतीयों ने प्रेस को नागरिक अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त माध्यम माना, लेकिन ब्रिटिश सरकार ने इसे कुचलने के लिए कानूनी हथकंडे अपनाए।

- **सुरेंद्रनाथ बनर्जी (1883):** ये पहले भारतीय पत्रकार थे जिन्हें उनके लेखन के कारण जेल भेजा गया। उन्होंने 'द बंगाली' में एक हाई कोर्ट जज के फैसले की आलोचना की थी। उनके समर्थन में कलकत्ता में हड़ताल हुई, जो नागरिक अधिकारों के लिए पहली बड़ी संगठित प्रतिक्रिया थी।
- **बाल गंगाधर तिलक:** तिलक ने 'केसरी' के माध्यम से जनता को नागरिक अधिकारों के प्रति जागरूक किया। 1897 में उन पर **राजद्रोह (Sedition - धारा 124A)** का मुकदमा चलाया गया, जिसने 'अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता' को राष्ट्रीय मुद्दा बना दिया।

#### 4. विधायी भागीदारी की मांग: "बिना प्रतिनिधित्व के कोई कर नहीं"

उदारवादी नेताओं ने ब्रिटिश संसद के लोकतांत्रिक मूल्यों का हवाला देते हुए परिषदों के विस्तार की मांग की।

- **1861 बनाम 1892 का अधिनियम:** 1861 के एक्ट में भारतीयों की भागीदारी केवल 'नाममात्र' थी। भारतीयों ने परिषदों में **निर्वाचित सदस्यों** और **बजट पर चर्चा** के अधिकार की मांग की।
- **उपलब्धि:** 1892 के परिषद अधिनियम ने भारतीयों को बजट पर प्रश्न पूछने का सीमित अधिकार दिया, जो नागरिक अधिकारों की दिशा में पहली वैधानिक जीत थी।

#### 5. विश्लेषण: कानून—औपनिवेशिक नियंत्रण बनाम राष्ट्रीय प्रतिरोध

19वीं सदी की कानूनी लड़ाई ने सिद्ध किया कि ब्रिटिश न्याय व्यवस्था 'दोहरे मापदंडों' पर आधारित थी। इल्बर्ट बिल विवाद ने भारतीयों के भ्रम को तोड़ दिया कि अंग्रेज उन्हें अपने बराबर मानेंगे। इस वैधानिक संघर्ष ने ही भविष्य के 'सविनय अवज्ञा' आंदोलनों की जमीन तैयार की, जहाँ कानून को जानबूझकर तोड़ना एक राजनैतिक विरोध का माध्यम बना। RPSC परीक्षाओं में अक्सर **इल्बर्ट बिल के वर्ष**, **सी.पी. इल्बर्ट के पद** और **1892 एक्ट की विशेषताओं** पर प्रश्न पूछे जाते हैं।

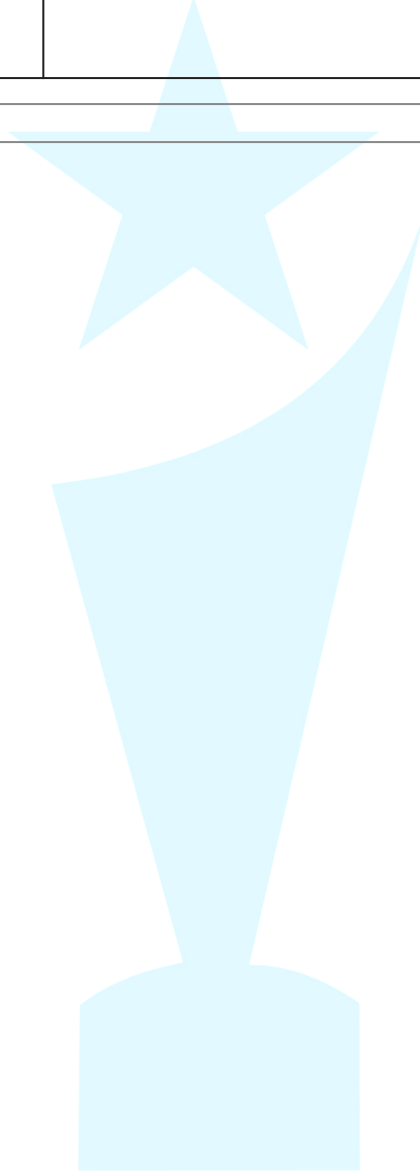
#### 6. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य:** **लॉर्ड रिपन** को उनके उदारवादी सुधारों और इल्बर्ट बिल के समर्थन के कारण 'सज्जन रिपन' कहा जाता है।
- **तथ्य:** **लोकमान्य तिलक** पर 1897 में चापेकर बंधुओं द्वारा की गई प्लेग कमिश्नर रैंड की हत्या के लिए उकसाने का आरोप लगाकर राजद्रोह का मुकदमा चलाया गया था।
- **नोट:** राजस्थान की रियासतों में इस समय 'महेंद्र राज सभा' (मेवाड़) जैसी संस्थाएँ न्यायिक सुधारों की दिशा में कार्य कर रही थीं।
- **विरोधाभास:** जहाँ अंग्रेज 'सभ्यता का प्रसार' (Civilizing Mission) का दावा करते थे, वहीं इल्बर्ट बिल जैसे विवादों में उनकी 'नस्लीय श्रेष्ठता' की ग्रंथि स्पष्ट रूप से उजागर हो गई।

#### 7. संदर्भ तालिका (Quick Scan)

घटना / अधिनियम	वर्ष	मुख्य उद्देश्य / प्रभाव
इल्बर्ट बिल	1883	भारतीय जजों को यूरोपीय लोगों के मुकदमे सुनने का अधिकार देना।
राजद्रोह धारा 124A	1870	प्रेस और भाषण की स्वतंत्रता का दमन करने हेतु जोड़ी गई।

परिषद अधिनियम	1892	बजट पर बहस करने का सीमित अधिकार।
सुरेंद्रनाथ बनर्जी	1883	प्रेस स्वतंत्रता हेतु जेल जाने वाले प्रथम नेता।



wincompete

## अध्याय 14: वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं तकनीकी जागरूकता का प्रारंभ

19वीं सदी का उत्तरार्ध भारत में 'वैज्ञानिक राष्ट्रवाद' के उदय का साक्षी रहा। शिक्षित भारतीयों ने महसूस किया कि औपनिवेशिक दासता से मुक्ति के लिए केवल राजनैतिक चेतना पर्याप्त नहीं है, बल्कि तकनीकी और वैज्ञानिक आत्मनिर्भरता भी अनिवार्य है।

### 1. वैज्ञानिक जागृति की पृष्ठभूमि

अंग्रेजी शिक्षा ने जहाँ प्रशासन के लिए सहायक तैयार किए, वहीं इसने भारतीयों को **न्यूटन, डार्विन और गैलीलियो** के सिद्धांतों से भी परिचित कराया।

- **तर्कवाद का विकास:** राजा राममोहन राय ने 1823 में लॉर्ड एमहर्स्ट को पत्र लिखकर मांग की थी कि भारत में संस्कृत के स्थान पर 'प्राकृतिक विज्ञान, गणित और रसायन शास्त्र' की शिक्षा दी जाए।
- **संस्थानों की भूमिका:** 'एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल' (1784) ने यद्यपि प्राच्य विद्या पर ध्यान दिया, लेकिन इसने भारत के वनस्पति विज्ञान (Botany) और भू-विज्ञान (Geology) के व्यवस्थित अध्ययन की नींव भी रखी।

### 2. डॉ. महेंद्रलाल सरकार और IACS (1876)

डॉ. महेंद्रलाल सरकार भारत में आधुनिक विज्ञान के सबसे बड़े संगठक माने जाते हैं।

- **इंडियन एसोसिएशन फॉर द कल्चिवेशन ऑफ साइंस (IACS):** इसकी स्थापना **29 जुलाई, 1876** को कलकत्ता में हुई।
  - **उद्देश्य:** भारतीयों को स्वयं के द्वारा, स्वयं के लिए विज्ञान का शिक्षण और शोध कराना। यह पूर्णतः भारतीयों द्वारा वित्तपोषित **प्रथम वैज्ञानिक संस्थान** था।
  - **ऐतिहासिक महत्व:** इसी संस्थान की प्रयोगशाला में आगे चलकर **सी.वी. रमन** ने अपना नोबेल पुरस्कार विजेता शोध (रमन प्रभाव) किया था।
- **महेंद्रलाल सरकार का दर्शन:** वे पेशे से एलोपैथिक डॉक्टर थे लेकिन बाद में होम्योपैथी की ओर मुड़े। उनका मानना था कि भारत का उत्थान 'प्रयोगशालाओं' (Laboratories) से होगा।

### 3. आधुनिक तकनीकी संस्थानों का उदय

19वीं सदी में रेलवे, नहरों और निर्माण कार्यों की आवश्यकता ने भारत में तकनीकी शिक्षा के द्वार खोले।

- **थॉमसन कॉलेज ऑफ सिविल इंजीनियरिंग (रुड़की):** इसकी स्थापना **1847** में हुई। यह भारत और दक्षिण एशिया का **प्रथम इंजीनियरिंग कॉलेज** था। (RPSC का अति-महत्वपूर्ण तथ्य)।
- **अन्य कॉलेज:** 1850 के दशक में पूना (1854), कलकत्ता (1856) और मद्रास (1858) में इंजीनियरिंग कॉलेजों की स्थापना हुई।
- **वैज्ञानिक विभाग:** \* **भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (GSI):** 1851 में स्थापना।
  - **भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (IMD):** 1875 में स्थापना।

### 4. तकनीकी जागरूकता और औद्योगिक मेलों का प्रारंभ

19वीं सदी के अंत तक भारतीयों ने विज्ञान को 'व्यवसाय' से जोड़ना शुरू किया।

- **P.C. Ray (प्रफुल्ल चंद्र राय):** इन्होंने 'बंगाल केमिकल्स एंड फार्मास्युटिकल्स' की नींव रखी, जिसने भारत में रासायनिक उद्योग का मार्ग प्रशस्त किया।
- **J.C. Bose (जगदीश चंद्र बोस):** इन्होंने बेतार संचार (Wireless Communication) और पौधों में चेतना पर शोध कर विश्व स्तर पर भारतीय मेधा का लोहा मनवाया।

## 5. विश्लेषण: 'वैज्ञानिक राष्ट्रवाद' का उदय

19वीं सदी की वैज्ञानिक जागृति केवल 'ज्ञान' की प्राप्ति नहीं थी, बल्कि यह ब्रिटिश श्रेष्ठता के दावे को चुनौती थी। महेंद्रलाल सरकार और जमशेदजी टाटा (बाद में IISc के प्रणेता) जैसे विचारकों ने यह सिद्ध किया कि भारत तभी स्वतंत्र हो सकता है जब वह तकनीकी रूप से स्वावलंबी हो। RPSC परीक्षाओं में अक्सर 'रुड़की कॉलेज' का वर्ष और 'IACS' के संस्थापक के बारे में प्रश्न पूछे जाते हैं। यह खंड यह भी स्पष्ट करता है कि भारत का आधुनिक विज्ञान पश्चिमी नकल नहीं, बल्कि राष्ट्रवादी चेतना का परिणाम था।

## 6. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य:** रुड़की इंजीनियरिंग कॉलेज का नाम 1854 में इसके वास्तविक संस्थापक जेम्स थॉमसन के नाम पर 'थॉमसन कॉलेज' रखा गया था।
- **तथ्य:** जगदीश चंद्र बोस ने 1895 में कलकत्ता के प्रेसीडेंसी कॉलेज में सूक्ष्म तरंगों (Microwaves) का सफल प्रदर्शन किया था।
- **नोट:** राजस्थान में भी इस दौरान तकनीकी चेतना का विकास हुआ, जहाँ 1887 में अजमेर में रेलवे वर्कशॉप की स्थापना ने स्थानीय स्तर पर तकनीकी कौशल को बढ़ावा दिया।
- **विरोधाभास:** अंग्रेजों ने तकनीकी शिक्षा का विस्तार किया, लेकिन उच्च पदों पर भारतीयों की नियुक्ति को हमेशा बाधित रखा, जिससे 'वैज्ञानिक भेदभाव' की स्थिति बनी रही।

## 7. संदर्भ तालिका (Quick Scan)

संस्थान / विभाग	स्थापना वर्ष	स्थान	प्रमुख व्यक्तित्व
रुड़की इंजीनियरिंग कॉलेज	1847	रुड़की (उत्तराखंड)	जेम्स थॉमसन
IACS	1876	कलकत्ता	डॉ. महेंद्रलाल सरकार

भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (GSI)	1851	कलकत्ता	ब्रिटिश सरकार
मौसम विज्ञान विभाग	1875	पुणे / कलकत्ता	ब्रिटिश सरकार
प्रेसीडेंसी कॉलेज (विज्ञान)	1817	कलकत्ता	राजा राममोहन राय



wincompete

## अध्याय 15: महिला उत्थान एवं स्त्री शिक्षा के प्रति बौद्धिक दृष्टिकोण

19वीं शताब्दी के समाज सुधारकों ने यह अनुभव किया कि किसी भी राष्ट्र की प्रगति की माप वहाँ की महिलाओं की स्थिति से की जा सकती है। इस काल में सुधारों का केंद्र 'सती प्रथा' के विरोध से बढ़कर 'स्त्री शिक्षा' और 'विधवा पुनर्विवाह' तक पहुँच गया।

### 1. ईश्वर चंद्र विद्यासागर: विधवाओं के मसीहा

ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने प्राचीन ग्रंथों के प्रमाणों के आधार पर यह सिद्ध किया कि हिंदू धर्म में विधवा विवाह को मान्यता प्राप्त है।

- **विधवा पुनर्विवाह अधिनियम, 1856:** विद्यासागर के अथक प्रयासों और 900 से अधिक लोगों के हस्ताक्षर युक्त प्रार्थना पत्र के कारण **लॉर्ड डलहौजी** ने इसका मसौदा तैयार किया और **लॉर्ड कैनिंग** के समय यह कानून (नियम XV) पारित हुआ।
- **स्त्री शिक्षा:** इन्होंने बंगाल में 35 से अधिक बालिका विद्यालयों की स्थापना की। 1849 में स्थापित '**बेथुन स्कूल**' (Bethune School) के वे सचिव थे, जो भारत में महिला शिक्षा का एक मील का पत्थर साबित हुआ।

### 2. ज्योतिबा फुले एवं सावित्रीबाई फुले: प्रथम क्रांतिकारी शिक्षक

महाराष्ट्र में महिला शिक्षा और दलित उत्थान के आंदोलन को फुले दंपति ने एक नई दिशा दी।

- **प्रथम बालिका विद्यालय:** ज्योतिबा फुले ने 1848 में पुणे के 'भिड़े वाडा' में भारत का **प्रथम बालिका विद्यालय** खोला।
- **सावित्रीबाई फुले:** वे भारत की **प्रथम महिला शिक्षिका** बनीं। उन्होंने कट्टरपंथियों के विरोध के बावजूद लड़कियों को पढ़ाना जारी रखा।
- **सत्यशोधक समाज (1873):** इसके माध्यम से उन्होंने विवाह की सादगी और महिलाओं को बिना पुरोहित के विवाह संस्कार संपन्न करने हेतु प्रेरित किया।

### 3. महिला अधिकारों हेतु प्रमुख वैधानिक सुधार

19वीं सदी में ब्रिटिश सरकार ने भारतीय सुधारकों के दबाव में कई कानून बनाए:

अधिनियम / प्रथा	वर्ष	वायसराय / गवर्नर जनरल	मुख्य सुधार
सती प्रथा निषेध	1829	लॉर्ड विलियम बेंटिक	नियम XVII द्वारा सती प्रथा को अवैध घोषित किया गया।

विधवा पुनर्विवाह	1856	लॉर्ड कैनिंग	विधवा विवाह को वैध माना गया।
नेटिव मैरिज एक्ट	1872	लॉर्ड नॉर्थब्रुक	अंतरजातीय विवाह और बाल विवाह पर रोक का प्रयास।
एज ऑफ कंसेंट एक्ट	1891	लॉर्ड लैंसडाउन	लड़कियों के विवाह की आयु <b>12 वर्ष</b> निर्धारित की गई।

#### 4. अन्य प्रमुख समाज सुधारक एवं संस्थाएँ

- **बी.एम. मालाबारी:** इन्होंने 'एज ऑफ कंसेंट एक्ट' (1891) को पारित करवाने में मुख्य भूमिका निभाई।
- **डी.के. कर्वे:** इन्होंने 1899 में पुणे में 'विधवा आश्रम' खोला और 1916 में मुंबई में '**प्रथम भारतीय महिला विश्वविद्यालय**' की स्थापना की।
- **पंडिता रमाबाई:** इन्होंने 'आर्य महिला समाज' की स्थापना की और 'शारदा सदन' के माध्यम से बेसहारा महिलाओं को आश्रय दिया।

#### 5. विश्लेषण: महिला उत्थान—समानता की ओर प्रथम चरण

19वीं सदी के महिला सुधार आंदोलन की विशेषता यह थी कि प्रारंभ में इसका नेतृत्व 'पुरुषों' (राजा राममोहन राय, विद्यासागर) ने किया, लेकिन सदी के अंत तक महिलाओं ने स्वयं (पंडिता रमाबाई, सावित्रीबाई फुले) कमान संभाल ली थी। यह आंदोलन केवल 'दया' पर आधारित नहीं था, बल्कि यह 'न्याय' की मांग थी। RPSC परीक्षाओं में अक्सर '**एज ऑफ कंसेंट एक्ट**' और '**डी.के. कर्वे**' के संस्थानों पर प्रश्न पूछे जाते हैं। यह जागृति ही थी जिसने भविष्य में सरोजिनी नायडू और एनी बेसेंट जैसे नेतृत्व को जन्म दिया।

#### 6. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य: सावित्रीबाई फुले** ने विधवाओं के बच्चों के लिए 'बालहत्या प्रतिबंधक गृह' की स्थापना की थी।
- **तथ्य: डी.के. कर्वे** को उनके महिला उत्थान के कार्यों के लिए 1958 में 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया था।
- **नोट:** राजस्थान में भी महिला शिक्षा की अलख जगी, जहाँ 1866 में **जयपुर में प्रथम कन्या विद्यालय** खोला गया था।
- **विरोधाभास:** बाल गंगाधर तिलक जैसे कुछ राष्ट्रवादी 'एज ऑफ कंसेंट एक्ट' के विरोधी थे, क्योंकि उनका मानना था कि ब्रिटिश सरकार को भारतीयों के सामाजिक/पारिवारिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।

## 7.संदर्भ तालिका (Quick Scan)

व्यक्तित्व	संस्था / कार्य	प्रमुख उपलब्धि
ईश्वर चंद्र विद्यासागर	बेथुन स्कूल	विधवा पुनर्विवाह अधिनियम 1856।
ज्योतिबा फुले	सत्यशोधक समाज	1848 में प्रथम बालिका विद्यालय।
पंडिता रमाबाई	शारदा सदन	उच्च वर्णीय विधवाओं का उत्थान।
बी.एम. मालाबारी	सेवा सदन	बाल विवाह के विरुद्ध संघर्ष।
डी.के. कर्वे	महिला विश्वविद्यालय	1916 में प्रथम महिला विश्वविद्यालय।

# आधुनिक भारत में प्रेस और पश्चिमी शिक्षा

## अध्याय 16: भारतीय प्रेस का विकास: प्रमुख समाचार पत्र एवं संपादक

भारत में आधुनिक प्रेस का इतिहास संघर्ष और वैचारिक क्रांति का इतिहास है। प्रेस ने न केवल सूचनाएँ दीं, बल्कि भारतीय राष्ट्रवाद के 'शिक्षक' की भूमिका भी निभाई।

### 1. प्रेस का प्रारंभ: हिक्की का गजट (1780)

भारत में प्रिंटिंग प्रेस की शुरुआत 16वीं सदी में पुर्तगालियों ने की थी, लेकिन समाचार पत्रों का व्यवस्थित प्रारंभ ब्रिटिश काल में हुआ।

- **बंगाल गजट (Bengal Gazette):** 29 जनवरी, 1780 को **जेम्स ऑगस्टस हिक्की (J.A. Hicky)** ने भारत का प्रथम समाचार पत्र प्रकाशित किया।
  - **विशेषता:** यह एक साप्ताहिक पत्र था। हिक्की ने सरकारी भ्रष्टाचार की तीखी आलोचना की, जिसके कारण उनका प्रेस जब्त कर लिया गया।
  - **उपनाम:** इसे 'कलकत्ता जनरल एडवर्टाइजर' भी कहा जाता था।

### 2. राजा राममोहन राय: 'भारतीय पत्रकारिता के अग्रदूत'

19वीं सदी के प्रारंभ में प्रेस को समाज सुधार का माध्यम बनाने का श्रेय राजा राममोहन राय को जाता है। उन्होंने भाषाई पत्रकारिता की नींव रखी।

- **संवाद कौमुदी (1821):** बंगाली साप्ताहिक। इसके माध्यम से उन्होंने सती प्रथा के विरुद्ध वैचारिक युद्ध लड़ा।
- **मिरात-उल-अखबार (1822):** यह प्रथम फारसी साप्ताहिक पत्र था।
- **ब्रह्मणिकल मैगजीन (1821):** अंग्रेजी में। ईसाई मिशनरियों के धार्मिक हस्तक्षेप के जवाब में प्रकाशित।

### 3. प्रेस का मुक्तिदाता: चार्ल्स मेटकाफ (1835)

1823 के कठोर 'लाइसेंसिंग नियमों' (एडम्स के नियम) को निरस्त करने के कारण **चार्ल्स मेटकाफ** को 'भारतीय प्रेस का मुक्तिदाता' कहा जाता है। उन्होंने 'लिबरेशन ऑफ द इंडियन प्रेस एक्ट' पारित कर प्रेस को पुनः स्वतंत्रता दी।

wincompete

#### 4. 19वीं सदी के प्रमुख राष्ट्रवादी समाचार पत्र

1857 के विद्रोह के बाद प्रेस अधिक राजनैतिक और आक्रामक हो गया।

समाचार पत्र	संस्थापक / संपादक	भाषा	विशेष संदर्भ
हिंदू पैट्रियट	हरीश चंद्र मुखर्जी	अंग्रेजी	नील विद्रोह (Indigo Revolt) का पुरजोर समर्थन।
सोम प्रकाश	ईश्वर चंद्र विद्यासागर	बंगाली	लिटन के वर्नाकुलर प्रेस एक्ट का प्रथम शिकार।
अमृत बाजार पत्रिका	शिशिर कुमार घोष	बंगाली/अंग्रेजी	रातों-रात बंगाली से अंग्रेजी में बदल गया (1878 Act)।
द हिंदू	जी. सुब्रमण्यम अय्यर	अंग्रेजी	मद्रास से राष्ट्रवादी विचारों का प्रसार।
केसरी एवं मराठा	बाल गंगाधर तिलक	मराठी/अंग्रेजी	उग्र राष्ट्रवाद और शिवाजी उत्सव का प्रचार।
द बंगाली	सुरेंद्रनाथ बनर्जी	अंग्रेजी	नागरिक अधिकारों हेतु संघर्ष।
वॉयस ऑफ इंडिया	दादाभाई नौरोजी	अंग्रेजी	ब्रिटिश संसद में भारतीय पक्ष।

## 5. राजस्थान में प्रेस का उदय

राजस्थान की रियासतों में चेतना जगाने में यहाँ के स्थानीय पत्रों का बड़ा योगदान रहा।

- **मजहरुल सरूर (1849):** भरतपुर से प्रकाशित राजस्थान का प्रथम द्विभाषी (हिंदी-उर्दू) पत्र।
- **राजपूताना गजट (1885):** मौलवी मुराद अली 'बीमार' द्वारा अजमेर से।

## 6. विश्लेषण: प्रेस—राष्ट्रवाद की प्रयोगशाला

19वीं सदी में समाचार पत्र केवल समाचार देने के माध्यम नहीं थे, बल्कि वे 'राजनीति के स्कूल' थे। राष्ट्रवादी प्रेस ने 'धन के निष्कासन' के गूढ़ सिद्धांतों को कहानियों और संपादकीय के माध्यम से किसानों तक पहुँचाया। **अमृत बाजार पत्रिका** का रातों-रात भाषा बदलना यह सिद्ध करता है कि भारतीय प्रेस कितना सतर्क और विद्रोही था। RPSC परीक्षाओं में अक्सर **तिलक के पत्रों की भाषा** (मराठा अंग्रेजी में और केसरी मराठी में) पर भ्रामक प्रश्न पूछे जाते हैं, जिनका स्पष्ट ज्ञान आवश्यक है।

## 7. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य: फर्दूनजी मरज़बान** ने 1822 में 'बॉम्बे समाचार' शुरू किया, जो गुजराती भाषा का प्रथम पत्र था और आज भी प्रकाशित होता है।
- **तथ्य: वैलेंटाइन शिरोल** ने तिलक की पत्रकारिता के कारण ही उन्हें 'भारतीय अशांति का जनक' कहा था।
- **नोट:** 19वीं सदी में प्रेस का मुख्य उद्देश्य 'व्यवसाय' नहीं बल्कि 'मिशन' (सेवा) था, इसलिए अधिकांश राष्ट्रवादी संपादक घाटे में रहने के बावजूद पत्र चलाते थे।
- **विरोधाभास:** जहाँ एंग्लो-इंडियन प्रेस (जैसे- टाइम्स ऑफ इंडिया) ब्रिटिश सरकार का समर्थन करता था, वहीं भाषाई प्रेस (Vernacular Press) हमेशा सरकार के निशाने पर रहता था।

## 8. संदर्भ तालिका (Quick Scan)

प्रश्न का केंद्र	उत्तर / तथ्य
प्रथम समाचार पत्र	बंगाल गजट (1780)।
प्रेस का मुक्तिदाता	चार्ल्स मेटकाफ।

हिंदी का प्रथम पत्र	उदंत मार्टंड (1826) - जुगल किशोर शुक्ल।
नील आंदोलन का मुखपत्र	हिंदू पैट्रियट।
प्रथम राष्ट्रवादी प्रेस	अमृत बाजार पत्रिका।



wincompete

## अध्याय 17: प्रेस पर प्रतिबंध: वर्नाकुलर प्रेस एक्ट एवं अन्य सेंसरशिप कानून

19वीं शताब्दी में जैसे-जैसे भाषाई प्रेस (Vernacular Press) ने औपनिवेशिक शोषण और अकालों के प्रति जनता को जागरूक करना शुरू किया, ब्रिटिश सरकार ने प्रेस की स्वतंत्रता को अपनी सुरक्षा के लिए खतरा माना। इसके परिणामस्वरूप कई कठोर और भेदभावपूर्ण कानून अस्तित्व में आए।

### 1. प्रारंभिक सेंसरशिप और लाइसेंसिंग कानून

- **प्रेस सेंसरशिप अधिनियम, 1799:** लॉर्ड वेलेज़ली ने फ्रांसीसी आक्रमण के डर से यह अधिनियम लागू किया। इसके तहत समाचार पत्रों को प्रकाशन से पूर्व सरकारी सचिव के पास 'प्री-सेंसरशिप' के लिए भेजना अनिवार्य था।
- **लाइसेंसिंग रेगुलेशन, 1823:** जॉन एडम्स ने इसे लागू किया। इसके तहत बिना लाइसेंस के प्रेस रखना दंडनीय अपराध था। इसी कानून के शिकार होकर राजा राममोहन राय को अपना फारसी पत्र 'मिरात-उल-अखबार' बंद करना पड़ा था।
- **पंजीकरण अधिनियम, 1867:** इसका उद्देश्य दमन नहीं, बल्कि प्रेस पर नियामक नियंत्रण रखना था, ताकि मुद्रक और प्रकाशक की पहचान सुनिश्चित की जा सके।

### 2. वर्नाकुलर प्रेस एक्ट, 1878 (Vernacular Press Act)

यह 19वीं सदी का सबसे विवादित और दमनकारी कानून था, जिसे **लॉर्ड लिटन** ने पारित किया था।

- **उपनाम:** इसे 'मुँह बंद करने वाला अधिनियम' (Gagging Act) कहा गया।
- **कारण:** 1876-78 के भीषण अकाल के समय सरकारी विफलता की आलोचना और रूसी विस्तारवाद के प्रति भारतीयों की सहानुभूति को दबाने के लिए।
- **प्रमुख प्रावधान:**
  - जिला मजिस्ट्रेट को यह अधिकार दिया गया कि वह किसी भी भाषाई समाचार पत्र के प्रकाशक से 'बांड' (Bond) भरवा ले कि वह सरकार के विरुद्ध कुछ नहीं छापेगा।
  - मजिस्ट्रेट का निर्णय अंतिम था; इसके विरुद्ध **अदालत में अपील** नहीं की जा सकती थी।
  - **नस्तीय भेदभाव:** यह कानून केवल 'भारतीय भाषाओं' के पत्रों पर लागू था, 'अंग्रेजी प्रेस' को इससे मुक्त रखा गया था।

### 3. 'अमृत बाजार पत्रिका' का ऐतिहासिक प्रकरण

वर्नाकुलर प्रेस एक्ट का सबसे दिलचस्प और महत्वपूर्ण प्रभाव **शिशिर कुमार घोष** की 'अमृत बाजार पत्रिका' पर पड़ा।

- सरकार इस पत्र को निशाना बनाना चाहती थी क्योंकि यह बंगाली भाषा में तीखे राष्ट्रवादी लेख छापता था।
- कानून के लागू होते ही, दंड से बचने के लिए यह पत्र **रातों-रात बंगाली से अंग्रेजी भाषा** में परिवर्तित हो गया। इस चतुर कदम ने ब्रिटिश सरकार को स्तब्ध कर दिया और यह पत्र दमन से बच गया।
- **ईश्वर चंद्र विद्यासागर** का 'सोम प्रकाश' इस अधिनियम के तहत प्रतिबंधित होने वाला पहला प्रमुख समाचार पत्र बना।

#### 4. प्रतिबंधों का अंत और पुनरावृत्ति

- **निरसन (Repeal):** 1882 में उदारवादी वायसराय **लॉर्ड रिपन** ने वर्नाकुलर प्रेस एक्ट को निरस्त कर दिया और भाषाई प्रेस को पुनः अंग्रेजी प्रेस के समान अधिकार प्रदान किए।
- **राजद्रोह कानून (1898):** 19वीं सदी के अंत में भारतीय दंड संहिता की **धारा 124A** और **153A** को और अधिक कठोर बनाया गया, ताकि राजद्रोही लेखन पर अंकुश लगाया जा सके।

#### 5. विश्लेषण: सेंसरशिप—राष्ट्रवाद का अदृश्य इंजन

ब्रिटिश सेंसरशिप का उद्देश्य प्रेस को नियंत्रित करना था, लेकिन इसके प्रभाव 'प्रतिक्रियावादी' रहे। वर्नाकुलर प्रेस एक्ट ने भारतीयों को यह समझा दिया कि ब्रिटिश 'अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता' और 'समानता' के दावे केवल कागजी हैं। इल्बर्ट बिल विवाद की तरह ही इस अधिनियम ने भी भारतीयों को एक मंच पर आने के लिए प्रेरित किया। RPSC परीक्षाओं में अक्सर **'मुँह बंद करने वाला अधिनियम'** और **'रिपन द्वारा निरसन'** के तथ्यों पर आधारित प्रश्न पूछे जाते हैं। यह खंड यह भी स्पष्ट करता है कि प्रेस ने दमन के बीच 'कानूनी दांव-पेच' (जैसे भाषा बदलना) सीख लिए थे।

#### 6. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य:** लॉर्ड लिटन ने प्रेस एक्ट के साथ-साथ **'शस्त्र अधिनियम' (Arms Act, 1878)** भी पारित किया था, जिसने भारतीयों में गहरा रोष पैदा किया।
- **तथ्य:** **लॉर्ड रिपन** को 'भारतीय प्रेस का उद्धारक' भी माना जाता है (चार्ल्स मेटकाफ के बाद)।
- **नोट:** 19वीं सदी में राष्ट्रवादी प्रेस ने 'संपादकीय' की जगह 'कहानियों और व्यंग्य' का प्रयोग शुरू किया ताकि सेंसरशिप से बचा जा सके।
- **विरोधाभास:** जहाँ अंग्रेज प्रेस को 'सभ्यता' का माध्यम बताते थे, वहीं भारतीयों द्वारा उसी प्रेस का उपयोग 'स्वराज' की मांग के लिए किए जाने पर उसे 'राजद्रोह' करार दे दिया जाता था।

#### 7. त्वरित संदर्भ तालिका (Quick Scan)

अधिनियम / कानून	वर्ष	वायसराय / गवर्नर	मुख्य प्रभाव
एडम्स रेगुलेशन	1823	जॉन एडम्स	'मिरात-उल-अखबार' बंद हुआ।
मेटकाफ एक्ट	1835	चार्ल्स मेटकाफ	प्रेस की पूर्ण स्वतंत्रता।

वर्नाकुलर प्रेस एक्ट	1878	लॉर्ड लिटन	भाषाई प्रेस पर प्रतिबंध (Gagging Act)।
रिपन रिपील	1882	लॉर्ड रिपन	1878 के एक्ट को समाप्त किया।



wincompete

## अध्याय 18: पश्चिमी शिक्षा का विकास: मैकाले मिनट से वुड डिस्पैच तक

भारत में आधुनिक शिक्षा का विकास किसी परोपकारी उद्देश्य से नहीं, बल्कि कंपनी के प्रशासनिक खर्चों को कम करने और एक 'शिक्षित वफादार वर्ग' तैयार करने के लिए किया गया था।

### 1. 1813 का चार्टर एक्ट: प्रथम आधिकारिक प्रयास

ब्रिटिश संसद ने पहली बार भारतीय शिक्षा के लिए राज्य की जिम्मेदारी स्वीकार की।

- **प्रावधान:** विद्वान भारतीयों को प्रोत्साहित करने और विज्ञान के ज्ञान के प्रसार के लिए प्रतिवर्ष **1 लाख रुपये** खर्च करने का प्रावधान किया गया।
- **महत्व:** यह भारत में शिक्षा की सरकारी नीति की पहली औपचारिक शुरुआत थी, हालाँकि यह राशि अगले कई वर्षों तक विवादों के कारण खर्च नहीं हो सकी।

### 2. प्राच्य-पाश्चात्य विवाद (Orientalist-Anglicist Controversy)

1813 के फंड को खर्च करने के माध्यम को लेकर लोक शिक्षा समिति दो गुटों में बंट गई:

- **प्राच्यवादी (Orientalists):** इनके नेता **एच.टी. प्रिंसेप** थे। इनका तर्क था कि भारतीयों को उनकी अपनी भाषाओं (संस्कृत, अरबी, फारसी) में पारंपरिक ज्ञान दिया जाए।
- **पाश्चात्यवादी (Anglicists):** इनके नेता **लॉर्ड मैकाले** और **मुनरो** थे। इनका मानना था कि भारत के उत्थान के लिए अंग्रेजी के माध्यम से आधुनिक पश्चिमी विज्ञान और साहित्य की शिक्षा अनिवार्य है।

### 3. लॉर्ड मैकाले का स्मरण-पत्र (Macaulay's Minute, 1835)

लॉर्ड विलियम बेंटिक के समय कानूनी सदस्य लॉर्ड मैकाले ने इस विवाद को समाप्त कर दिया।

- **मैकाले का तर्क:** "एक अच्छे यूरोपीय पुस्तकालय की एक अलमारी का केवल एक कोना (Shelf), भारत और अरब के समस्त साहित्य के बराबर है।"
- **निर्णय:** 7 मार्च, 1835 को सरकार ने घोषणा की कि भविष्य में शिक्षा के लिए स्वीकृत धन का सर्वोत्तम उपयोग **अंग्रेजी के माध्यम से पाश्चात्य शिक्षा** देने में किया जाएगा।

### 4. अधोमुखी निस्यंदन सिद्धांत (Downward Filtration Theory)

चूँकि सरकार के पास सभी भारतीयों को शिक्षित करने के लिए पर्याप्त धन नहीं था, इसलिए मैकाले ने इस सिद्धांत का प्रतिपादन किया।

- **सिद्धांत:** शिक्षा समाज के **उच्च और मध्यम वर्ग** को दी जाए। इन शिक्षित लोगों से छन-छनकर (Filter होकर) शिक्षा स्वयं ही आम जनता (Masses) तक पहुँच जाएगी।
- **उद्देश्य:** ऐसे लोगों का वर्ग तैयार करना जो "रंग और रक्त में भारतीय हों, लेकिन विचार, रुचि और बुद्धि में अंग्रेज हों।"

### 5. वुड का घोषणा पत्र, 1854 (Wood's Despatch)

इसे 'भारतीय शिक्षा का मैग्ना कार्टा' (Magna Carta of Indian Education) कहा जाता है। सर चार्ल्स वुड ने शिक्षा की एक व्यापक योजना प्रस्तुत की।

● प्रमुख सिफारिशें:

- प्राथमिक शिक्षा **देशी भाषाओं** में और उच्च शिक्षा **अंग्रेजी** के माध्यम से दी जाए।
- भारत के पाँच प्रांतों में 'लोक शिक्षा विभाग' की स्थापना की जाए।
- कलकत्ता, बॉम्बे और मद्रास में लंदन विश्वविद्यालय की तर्ज पर **विश्वविद्यालयों** की स्थापना की जाए। (परिणामस्वरूप 1857 में तीन विश्वविद्यालय बने)।
- महिला शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा (Professional Education) पर बल दिया गया।
- 'अधोमुखी निस्यंदन सिद्धांत' को त्यागकर सरकार ने स्वयं जन-शिक्षा का उत्तरदायित्व स्वीकार किया।

## 6. विश्लेषण: शिक्षा—दासता का माध्यम या मुक्ति का मार्ग?

अंग्रेजों का मुख्य उद्देश्य प्रशासन के लिए 'सस्ते क्लर्क' तैयार करना था। लेकिन पाश्चात्य शिक्षा ने भारतीयों को **बेंथम, मिल और रूसो** के क्रांतिकारी विचारों से परिचित कराया। जिस अंग्रेजी भाषा को 'संपर्क भाषा' बनाया गया, उसी ने देश के विभिन्न हिस्सों के नेताओं को एक साझा मंच पर आकर अंग्रेजों के विरुद्ध संवाद करने में सक्षम बनाया। RPSC परीक्षाओं में अक्सर 'अधोमुखी निस्यंदन सिद्धांत' के प्रवर्तक और '**वुड डिस्पैच**' के वर्ष पर रक्षात्मक प्रश्न पूछे जाते हैं।

## 7. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य:** वुड डिस्पैच की सिफारिश पर ही 1855 में भारत में 'शिक्षा विभाग' (Department of Public Instruction) स्थापित हुआ।
- **तथ्य:** जे.ई.डी. बेथुन (J.E.D. Bethune) ने 1849 में कलकत्ता में प्रथम महिला विद्यालय की स्थापना की।
- **नोट:** राजस्थान में भी इस दौरान मेयो कॉलेज (अजमेर) जैसे संस्थानों की नींव पड़ी, हालाँकि उनका उद्देश्य सामंतों के बच्चों को अंग्रेजी शिक्षा देना था।
- **विरोधाभास:** जहाँ मैकाले ने भारतीय साहित्य को तुच्छ बताया, वहीं **मैक्स मूलर** और **विलियम जोन्स** जैसे प्राच्यवादियों ने वेदों और संस्कृत की महानता को विश्व स्तर पर पुनः स्थापित किया।

## 8. त्वरित संदर्भ तालिका (Quick Scan)

पड़ाव / अधिनियम	वर्ष	मुख्य प्रवर्तक	विशेष संज्ञा
चार्टर एक्ट	1813	ब्रिटिश संसद	शिक्षा हेतु 1 लाख का फंड।

मैकाले मिनट	1835	लॉर्ड मैकाले	अंग्रेजी शिक्षा की आधिकारिक नींव।
निस्पंदन सिद्धांत	1835	लॉर्ड मैकाले	'छन-छनकर' शिक्षा पहुँचाने का विचार।
वुड डिस्पैच	1854	चार्ल्स वुड	भारतीय शिक्षा का मैग्रा कार्टा।
विश्वविद्यालय	1857	कैनिंग काल	कलकत्ता, बॉम्बे, मद्रास में स्थापना।

wincompete

## अध्याय 19: उच्च शिक्षा एवं हंटर आयोग (1882): उपलब्धियां एवं प्रभाव

1854 के वुड के घोषणापत्र ने भारत में शिक्षा का जो ढांचा खड़ा किया था, 1880 के दशक तक आते-आते उसकी समीक्षा आवश्यक हो गई थी। इसी पृष्ठभूमि में लॉर्ड रिपन ने भारतीय शिक्षा के इतिहास के पहले 'आयोग' का गठन किया।

### 1. वुड डिस्पैच के बाद की प्रगति (1854-1882)

वुड डिस्पैच की सिफारिशों के फलस्वरूप भारत में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में तीव्र प्रगति हुई:

- **विश्वविद्यालयों का उदय:** 1857 में कलकत्ता, बॉम्बे और मद्रास विश्वविद्यालयों की स्थापना हुई।
- **शिक्षा का विस्तार:** सरकारी सहायता प्राप्त (Grants-in-aid) स्कूलों की संख्या बढ़ी, लेकिन मुख्य ध्यान 'उच्च वर्ग' और 'अंग्रेजी माध्यम' पर ही रहा।
- **चुनौतियाँ:** प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा उपेक्षित रही और सरकारी संसाधनों की कमी महसूस की जाने लगी।

### 2. हंटर शिक्षा आयोग (1882)

लॉर्ड रिपन ने विलियम विल्सन हंटर की अध्यक्षता में इस आयोग की नियुक्ति की। इसमें 8 भारतीय सदस्य भी शामिल थे।

- **मुख्य लक्ष्य:** 1854 के वुड डिस्पैच के बाद शिक्षा की प्रगति की जाँच करना और प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षा के सुधार हेतु सुझाव देना।
- **क्षेत्राधिकार:** इस आयोग के कार्यक्षेत्र से 'विश्वविद्यालयी शिक्षा' को बाहर रखा गया था (हालाँकि इसका प्रभाव उच्च शिक्षा पर भी पड़ा)।

### 3. प्रमुख सिफारिशें एवं उनका प्रभाव

#### A. प्राथमिक शिक्षा (Primary Education):

आयोग ने पहली बार प्राथमिक शिक्षा को 'राष्ट्रीय महत्व' का विषय माना।

- **माध्यम:** शिक्षा देशी भाषाओं (Vernacular) में दी जानी चाहिए।
- **प्रबंधन:** सरकार को प्राथमिक शिक्षा का नियंत्रण नवनिर्मित जिला बोर्डों और नगरपालिकाओं को सौंप देना चाहिए।
- **पाठ्यक्रम:** शिक्षा केवल अकादमिक न होकर जीवनोपयोगी (व्यवहारिक) होनी चाहिए।

#### B. माध्यमिक शिक्षा (Secondary Education):

माध्यमिक स्तर पर शिक्षा को दो श्रेणियों में विभाजित करने का सुझाव दिया गया:

1. **साहित्यिक (Literary):** जो विश्वविद्यालयी शिक्षा में प्रवेश के लिए थी।
2. **व्यावसायिक (Vocational):** जो व्यावसायिक और व्यापारिक जीवन के लिए छात्रों को तैयार करती थी।

#### C. उच्च शिक्षा एवं निजी प्रयास:

- सरकार को उच्च शिक्षा के सीधे नियंत्रण से हाथ खींच लेना चाहिए और इसके बजाय निजी शिक्षण संस्थानों को प्रोत्साहित करना चाहिए।
- शिक्षण संस्थानों को 'अनुदान सहायता' (Grants-in-aid) देने के नियमों को सरल बनाया जाए।

---

#### 4. हंटर आयोग के बाद उच्च शिक्षा का विस्तार

आयोग की सिफारिशों के परिणामस्वरूप निजी भारतीय प्रयासों से उच्च शिक्षा के संस्थानों में बाढ़ आ गई।

- **पंजाब विश्वविद्यालय:** 1882 में लाहौर में स्थापना।
- **इलाहाबाद विश्वविद्यालय:** 1887 में स्थापना।
- **धार्मिक प्रभाव:** इसी काल में 'आर्य समाज' (D.A.V. कॉलेज) और 'अलीगढ़ आंदोलन' (M.A.O. कॉलेज) के माध्यम से शिक्षा का तीव्र प्रसार हुआ।

---

#### 5. विश्लेषण: विकेंद्रीकरण की ओर पहला कदम

हंटर आयोग का सबसे बड़ा योगदान शिक्षा का '**विकेंद्रीकरण**' था। स्थानीय निकायों को जिम्मेदारी सौंपने का अर्थ था कि शिक्षा अब केवल सरकार का विषय नहीं, बल्कि समुदाय का विषय बन गई। हालाँकि, RPSC मुख्य परीक्षा के दृष्टिकोण से यह विश्लेषण महत्वपूर्ण है कि सरकार ने वित्तीय बोझ से बचने के लिए भी शिक्षा की जिम्मेदारी स्थानीय निकायों और निजी हाथों में सौंपी थी। इससे शिक्षा की 'गुणवत्ता' पर असर पड़ा, लेकिन 'प्रसार' (Reach) में अभूतपूर्व वृद्धि हुई।

---

#### 6. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य:** हंटर आयोग में **8 भारतीय सदस्य** शामिल थे, जिनमें सैय्यद अहमद खान और आनंद मोहन बोस जैसे नाम महत्वपूर्ण थे।
- **तथ्य:** **स्त्री शिक्षा** को बढ़ावा देने के लिए आयोग ने पर्याप्त सुझाव दिए और विशेष अनुदान की सिफारिश की।
- **नोट:** राजस्थान की रियासतों में इस समय 'वाल्टर कृत राजपुत्र हितकारिणी सभा' के माध्यम से शिक्षा और समाज सुधार के प्रयास चल रहे थे।
- **विरोधाभास:** जहाँ आयोग ने प्राथमिक शिक्षा पर बल दिया, वहीं निजी प्रयासों ने 'उच्च शिक्षा' और 'कॉलेज संस्कृति' को अधिक मजबूती दी क्योंकि शिक्षित वर्ग की मांग बढ़ रही थी।

## 7. संदर्भ तालिका (Quick Scan)

प्रश्न का केंद्र	उत्तर / तथ्य	परीक्षा महत्व
आयोग का वर्ष	1882	लॉर्ड रिपन के समय।
अध्यक्ष	विलियम विल्सन हंटर	'Imperial Gazetteer' के संपादक।
मुख्य बल	प्राथमिक शिक्षा पर	देशी भाषाओं के माध्यम से।
प्रबंधन	जिला एवं नगर बोर्ड	स्थानीय स्वशासन का प्रभाव।
विश्वविद्यालय	पंजाब (1882), इलाहाबाद (1887)	आयोग के तत्काल बाद स्थापना।

## अध्याय 20: शिक्षा और प्रेस का राष्ट्रीय आंदोलन में समन्वित प्रभाव

19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में, पश्चिमी शिक्षा और प्रेस ने एक-दूसरे के 'पूरक' के रूप में कार्य किया। जहाँ शिक्षा ने विचार दिए, वहीं प्रेस ने उन विचारों को पैर दिए ताकि वे पूरे भारत में भ्रमण कर सकें।

### 1. शिक्षित मध्यम वर्ग: राष्ट्रवाद का नया नेतृत्व

अंग्रेजी शिक्षा ने भारत में एक 'बौद्धिक संभ्रांत वर्ग' (Intelligentsia) पैदा किया। यह वर्ग संख्या में कम था, लेकिन वैचारिक रूप से अत्यंत प्रभावशाली था।

- **संयोजन:** अधिकांश राष्ट्रवादी संपादक स्वयं वकील, शिक्षक या डॉक्टर थे। (जैसे- तिलक, सुरेंद्रनाथ बनर्जी, जी. सुब्रमण्यम अय्यर)।
- **भूमिका:** इस वर्ग ने पश्चिमी राजनीतिक दर्शन (मिल, बेंथम, स्पेंसर) को भारतीय परिस्थितियों में अनुवादित किया। उन्होंने प्रेस का उपयोग केवल समाचार देने के लिए नहीं, बल्कि जनता को 'राजनैतिक रूप से शिक्षित' करने के लिए किया।

### 2. प्रेस: एक 'स्थाई संसद' के रूप में

19वीं सदी में जब भारतीयों को विधायी परिषदों में कोई वास्तविक शक्ति प्राप्त नहीं थी, तब प्रेस ने एक 'विपक्षी दल' या 'स्थाई संसद' की भूमिका निभाई।

- **राजनैतिक समाजीकरण:** समाचार पत्रों ने जनता को यह सिखाया कि ब्रिटिश शासन एक 'अपरिहार्य नियति' नहीं है, बल्कि एक 'परिवर्तनशील राजनैतिक व्यवस्था' है।
- **आर्थिक आलोचना का प्रसार:** दादाभाई नौरोजी के 'धन के निष्कासन' जैसे जटिल सिद्धांतों को प्रेस ने सरल मुहावरों और कविताओं के माध्यम से किसानों तक पहुँचाया। इसने 'साझा आर्थिक शत्रु' की पहचान स्थापित की।

### 3. समन्वित प्रभाव के प्रमुख आयाम

शिक्षा और प्रेस के मिलन ने भारतीय समाज में तीन प्रमुख परिवर्तन किए:

1. **अखिल भारतीय पहचान का निर्माण:** प्रेस ने प्रांतीय सीमाओं को तोड़ दिया। पंजाब में अकाल की खबर कलकत्ता के प्रेस में छपती थी और मद्रास के शिक्षित युवा उस पर चर्चा करते थे। इसने 'राष्ट्रीय एकता' की भावना को जन्म दिया।
2. **सरकारी गोपनीयता का अंत:** प्रेस ने सरकारी फाइलों, बजट और भेदभावपूर्ण कानूनों (जैसे- शस्त्र अधिनियम, लिटन की नीतियां) का सूक्ष्म विश्लेषण किया। इससे सरकार की 'न्यायप्रियता' का भ्रम टूट गया।
3. **संगठन की प्रेरणा:** प्रेस के माध्यम से ही कांग्रेस पूर्व संस्थाओं और बाद में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशनों का प्रचार-प्रसार हुआ। प्रेस ने राजनैतिक कार्यकर्ताओं के लिए एक 'नेटवर्क' का कार्य किया।

### 4. दमन और प्रतिरोध का चक्र

जैसे-जैसे शिक्षा और प्रेस का प्रभाव बढ़ा, ब्रिटिश दमन भी बढ़ा, जिसने राष्ट्रवाद को और अधिक 'उग्र' बना दिया।

- **बलिदान की संस्कृति:** जब सुरेंद्रनाथ बनर्जी या तिलक जैसे शिक्षित नेताओं को प्रेस के माध्यम से विचार व्यक्त करने हेतु जेल भेजा गया, तो जनता की नजर में वे 'नायक' बन गए। इससे ब्रिटिश कानून के प्रति सम्मान कम हुआ और 'नागरिक अधिकारों' की मांग बढ़ी।
- **भाषाई प्रेस की शक्ति:** अंग्रेजी शिक्षा ने नेतृत्व तैयार किया, लेकिन भाषाई प्रेस (Vernacular Press) ने उस नेतृत्व के संदेश को ग्रामीण जनता (Masses) तक पहुँचाया।

## 5. विश्लेषण: आधुनिकता का दोहरा प्रभाव

लॉर्ड मैकाले का उद्देश्य एक ऐसा वर्ग तैयार करना था जो 'विचारों में अंग्रेज' हो, लेकिन परिणाम इसके बिल्कुल विपरीत रहा। उसी शिक्षा ने भारतीयों को 'स्वतंत्रता' और 'लोकतंत्र' के मानकों से परिचित कराया और प्रेस ने उन मानकों पर ब्रिटिश शासन को कसना शुरू किया। यह आधुनिकता की सबसे बड़ी विडंबना थी कि जिस 'औजार' (शिक्षा और प्रेस) को शासन चलाने के लिए बनाया गया था, वही शासन के अंत का कारण बना। RPSC परीक्षाओं में अक्सर **शिक्षा और प्रेस के 'समन्वित प्रभाव'** पर विश्लेषणात्मक प्रश्न पूछे जाते हैं।

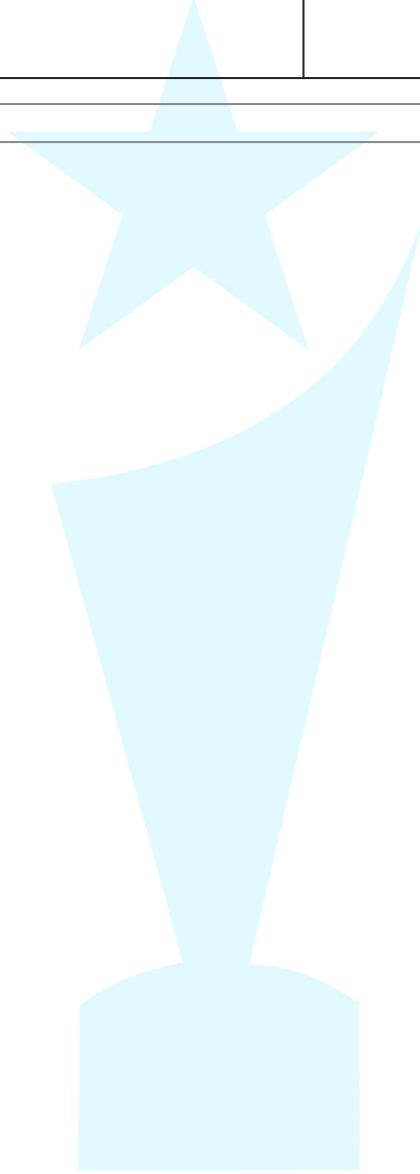
## 6. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य:** 19वीं सदी के अंत तक भारत में लगभग **500 से अधिक** समाचार पत्र प्रकाशित हो रहे थे, जिनमें से अधिकांश राष्ट्रवादी विचारधारा के थे।
- **तथ्य:** **गोपाल कृष्ण गोखले** ने कहा था कि "देश की वर्तमान परिस्थितियों में समाचार पत्र ही देश के वास्तविक राजनीतिज्ञ हैं।"
- **नोट:** राजस्थान में भी '**विजय सिंह पथिक**' और '**जयनारायण व्यास**' जैसे शिक्षित नेताओं ने आगे चलकर 'तरुण राजस्थान' और 'अखंड भारत' जैसे पत्रों के माध्यम से इसी समन्वित प्रभाव को धरातल पर उतारा।
- **विरोधाभास:** जहाँ ब्रिटिश सरकार ने प्रेस पर प्रतिबंध लगाए, वहीं वे प्रेस की शक्ति से इतने भयभीत थे कि वे अपनी गलतियों को सुधारने या उन पर स्पष्टीकरण देने के लिए स्वयं के पत्र (जैसे- पायनियर) को प्रोत्साहित करते थे।

## 7. त्वरित संदर्भ तालिका (Quick Scan)

तत्व	योगदान	परिणाम
पश्चिमी शिक्षा	वैचारिक आधार (लोकतंत्र, अधिकार)।	नेतृत्व का उदय।
आधुनिक प्रेस	संदेश का वाहक और जनमत निर्माण।	जन-आंदोलन की पृष्ठभूमि।

मध्यम वर्ग	लेखक, संपादक और आयोजक।	कड़वा और मुखर प्रतिरोध।
समन्वय	सिद्धांत (Theory) + प्रचार (PR)।	अखिल भारतीय चेतना।



wincompete

# सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन (नेता और संस्थाएं)

## अध्याय 21: ब्रह्म समाज: राजा राममोहन राय एवं सामाजिक सुधारों की आधारशिला

19वीं शताब्दी के प्रारंभ में भारतीय समाज अंधविश्वासों, बहुदेववाद, जातिगत संकीर्णता और 'सती प्रथा' जैसी अमानवीय कुरीतियों के गहन अंधकार में था। राजा राममोहन राय ने इस अंधकार को मिटाने के लिए 'ब्रह्म समाज' के रूप में एक नई मशाल जलाई।

### 1. वैचारिक पृष्ठभूमि और 'आत्मीय सभा'

राजा राममोहन राय का मानना था कि भारतीय समाज की कुरीतियों का मूल कारण 'बहुदेववाद' और 'मूर्तिपूजा' है।

- **एकेश्वरवाद (Monotheism):** 1809 में उन्होंने फारसी में 'तुहफत-उल-मुवाहिद्दीन' (एकेश्वरवादियों को उपहार) लिखी। इसमें उन्होंने तर्क दिया कि सभी धर्मों का मूल एक ही ईश्वर की उपासना है।
- **आत्मीय सभा (1815):** यह उनकी पहली संगठित संस्था थी, जहाँ दार्शनिक विषयों और सामाजिक बुराइयों पर चर्चा होती थी।
- **ईसाई धर्म का प्रभाव:** 1820 में उन्होंने 'Precepts of Jesus' (ईसा के नीति वचन) प्रकाशित की, जिसमें उन्होंने ईसा मसीह के चमत्कारिक पक्ष को छोड़कर उनकी नैतिक शिक्षाओं को स्वीकारा।

### 2. ब्रह्म समाज की स्थापना और सिद्धांत (1828)

20 अगस्त, 1828 को उन्होंने 'ब्रह्म सभा' की स्थापना की, जो आगे चलकर 'ब्रह्म समाज' बना।

- **मूल उद्देश्य:** हिंदू धर्म को शुद्ध करना और उसे तर्क पर आधारित बनाना।
- **प्रमुख सिद्धांत:**
  1. ईश्वर एक है और वह निराकार है। उसकी उपासना के लिए किसी प्रतिमा (मूर्ति) की आवश्यकता नहीं है।
  2. सभी धर्मों की मौलिक एकता में विश्वास।
  3. उपनिषदों के ज्ञान को आधार मानना (वेदों को त्रुटिहीन नहीं माना)।
  4. ऊँच-नीच, छुआछूत और सामाजिक भेदभाव का पूर्ण विरोध।

### 3. सामाजिक सुधार: सती प्रथा का अंत

राजा राममोहन राय का सबसे महान योगदान 'सती प्रथा' के विरुद्ध उनका निरंतर संघर्ष था।

- **प्रेरणा:** 1811 में उनकी अपनी भाभी के सती होने की घटना ने उन्हें झकझोर दिया था।
- **रणनीति:** उन्होंने 'संवाद कौमुदी' के माध्यम से जनमत तैयार किया और सिद्ध किया कि हिंदू शास्त्रों में सती प्रथा का कोई अनिवार्य स्थान नहीं है।
- **कानूनी विजय:** उनके प्रयासों से 4 दिसंबर, 1829 को तत्कालीन गवर्नर जनरल लॉर्ड विलियम बेंटिक ने नियम XVII (17) द्वारा सती प्रथा को पूर्णतः अवैध घोषित कर दिया।

#### 4. ब्रह्म समाज का विभाजन (The Splits)

राजा राममोहन राय की मृत्यु (1833, ब्रिस्टल) के बाद समाज का नेतृत्व देवेन्द्रनाथ टैगोर ने संभाला, लेकिन वैचारिक मतभेदों के कारण समाज कई शाखाओं में बंट गया।

वर्ष	विभाजन / शाखा	नेतृत्व	मुख्य विशेषता
1866	आदि ब्रह्म समाज	देवेन्द्रनाथ टैगोर	यह मूल परंपरावादी हिंदू मूल्यों से जुड़ा रहा।
1866	भारतीय ब्रह्म समाज	केशव चंद्र सेन	यह अधिक उदार और वैश्विक था (ईसाई-इस्लाम प्रभाव)।
1878	साधारण ब्रह्म समाज	आनंद मोहन बोस / शिवनाथ शास्त्री	केशव चंद्र सेन द्वारा अपनी पुत्री का बाल विवाह करने के विरोध में हुआ दूसरा विभाजन।

#### 5. विश्लेषण: सुधार या पश्चिमीकरण?

ब्रह्म समाज पर अक्सर यह आरोप लगाया जाता रहा कि यह 'पश्चिमी सभ्यता' की नकल था। लेकिन, सूक्ष्म विश्लेषण से पता चलता है कि राजा राममोहन राय ने पश्चिमी 'तर्क' का उपयोग 'भारतीय उपनिषदों' को पुनः प्रतिष्ठित करने के लिए किया था। उन्होंने 'स्वर्ण युग' को अतीत में नहीं, बल्कि भविष्य के सुधारों में देखा। RPSC परीक्षाओं में अक्सर **सती प्रथा के नियम संख्या (XVIII)** और **समाज के विभाजनों के नेतृत्व** पर प्रश्न पूछे जाते हैं। यह आंदोलन भले ही उच्च वर्ग तक सीमित रहा, लेकिन इसने आधुनिक भारतीय चेतना का 'प्रोटोकॉल' तैयार कर दिया।

#### 6. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य:** राजा राममोहन राय ने 1825 में '**वेदांत कॉलेज**' की स्थापना की, जहाँ भारतीय और पश्चिमी दोनों विद्याओं का शिक्षण होता था।
- **तथ्य:** **केशव चंद्र सेन** ने 'ब्रह्म समाज' को अखिल भारतीय बनाया; उनके प्रयासों से ही महाराष्ट्र में 'प्रार्थना समाज' की नींव पड़ी।
- **नोट:** राजस्थान में ब्रह्म समाज का प्रत्यक्ष प्रभाव बंगाल जितना नहीं था, लेकिन इसकी 'तर्कवादी पद्धति' ने यहाँ के सुधारकों को प्रेरित किया।
- **विरोधाभास:** जहाँ राममोहन राय मूर्तिपूजा के विरोधी थे, वहीं उनके सहयोगी **राधाकांत देव** ने 'धर्म सभा' बनाकर सती प्रथा और हिंदू रूढ़ियों का समर्थन किया, जो सुधारों के विरुद्ध प्रथम संगठित प्रतिक्रिया थी।

## 7.संदर्भ तालिका (Quick Scan)

पुस्तक / पत्र	भाषा	महत्व
तुहफत-उल-मुवाहिद्दीन	फारसी	एकेश्वरवाद का समर्थन।
संवाद कौमुदी	बंगाली	सती प्रथा के विरुद्ध अभियान।
मिरात-उल-अखबार	फारसी	राजनैतिक चेतना का विकास।
Precepts of Jesus	अंग्रेजी	नैतिक ईसाई धर्म की व्याख्या।
ब्रह्म समाज	-	1828 में स्थापित आधुनिक संस्था।

wincompete

## अध्याय 22: आर्य समाज: स्वामी दयानंद सरस्वती एवं 'वेदों की ओर लौटो' का आह्वान

जहाँ ब्रह्म समाज पाश्चात्य उदारवाद से प्रभावित था, वहीं आर्य समाज ने भारतीय राष्ट्रवाद की जड़ें प्राचीन वैदिक संस्कृति में तलाशीं। स्वामी दयानंद सरस्वती ने भारत को 'भारतवंशियों' के लिए एक वैचारिक मंच प्रदान किया।

### 1. स्वामी दयानंद सरस्वती: जीवन और व्यक्तित्व

- **प्रारंभिक जीवन:** इनका जन्म 1824 में गुजरात के **टंकारा** (मोरवी रियासत) में हुआ था। बचपन का नाम **मूल शंकर** था।
- **गुरु:** मथुरा के स्वामी **विरजानंद** इनके गुरु थे, जिन्होंने इन्हें वेदों के शुद्ध ज्ञान की शिक्षा दी।
- **आर्य समाज की स्थापना: 10 अप्रैल, 1875** को बॉम्बे के गिरगाम में।
  - **नोट:** 1877 में इसका मुख्यालय **लाहौर** स्थानांतरित कर दिया गया, जिसके बाद इसका प्रसार पंजाब और उत्तर भारत में तीव्र हुआ।

### 2. दार्शनिक आधार एवं 'सत्यार्थ प्रकाश'

स्वामी दयानंद सरस्वती ने 'तर्क' और 'वेदों' का समन्वय किया।

- **वेदों की ओर लौटो (Back to the Vedas):** उनका मानना था कि ऋग्वेद आदि चार वेद ही ईश्वर प्रदत्त और ज्ञान के अंतिम स्रोत हैं। बाद के पुराण और अन्य ग्रंथ भ्रम फैलाते हैं।
- **सत्यार्थ प्रकाश (1874):** यह आर्य समाज का मुख्य ग्रंथ है।
  - इसकी रचना मुख्य रूप से **उदयपुर (राजस्थान)** में हुई थी।
  - यह हिंदी भाषा में लिखा गया है, जिसका उद्देश्य जनमानस तक वेदों का संदेश पहुँचाना था।
- **चार 'स्व' का नारा:** स्वामी दयानंद ने ही सर्वप्रथम **स्वराज्य, स्वभाषा, स्वदेश और स्वधर्म** के महत्व को प्रतिपादित किया। (RPSC में यह प्रश्न बार-बार पूछा जाता है)।

### 3. सामाजिक सुधार एवं शुद्धि आंदोलन

आर्य समाज ने न केवल बुराइयों का विरोध किया, बल्कि एक आक्रामक सुरक्षात्मक रुख भी अपनाया।

- **सामाजिक कार्य:** बाल विवाह और मूर्तिपूजा का विरोध; विधवा विवाह और स्त्री शिक्षा का पुरजोर समर्थन।
- **शुद्धि आंदोलन (Shuddhi Movement):** यह उन लोगों के लिए था जिन्होंने अन्य धर्म (इस्लाम या ईसाई) अपना लिया था और अब वे पुनः हिंदू धर्म में लौटना चाहते थे। इसने हिंदू धर्म को एक 'धर्म-परिवर्तनीय' धर्म (Proselytizing Religion) बना दिया।
- **शिक्षा:** स्वामी जी की मृत्यु के बाद शिक्षा को लेकर समाज दो भागों में बंट गया:
  1. **पाश्चात्य समर्थक:** लाला हंसराज और लाला लाजपत राय (D.A.V. कॉलेज, लाहौर - 1886)।
  2. **परंपरावादी:** स्वामी श्रद्धानंद (गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार - 1902)।

#### 4. राजस्थान में स्वामी दयानंद सरस्वती का योगदान

राजस्थान स्वामी जी की 'कर्मस्थली' रहा है। यहाँ के सामंतों और शासकों को सुधारों हेतु प्रेरित करने में उनकी बड़ी भूमिका रही।

- **प्रथम आगमन:** राजस्थान में वे सर्वप्रथम जून 1865 में **करौली** आए थे।
- **परोपकारिणी सभा:** इसकी स्थापना **1883** में **उदयपुर** में स्वामी जी द्वारा की गई थी। इसके अध्यक्ष मेवाड़ के **महाराणा सज्जन सिंह** बनाए गए थे। इसका उद्देश्य वैदिक सिद्धांतों का प्रचार और प्रकाशन था।
- **परोपकारिणी प्रेस:** यह अजमेर में स्थापित किया गया जहाँ से 'सत्यार्थ प्रकाश' का मुद्रण हुआ।
- **महत्वपूर्ण प्रवास:** वे जयपुर, भरतपुर, शाहपुरा, चित्तौड़ और जोधपुर गए। जोधपुर प्रवास के दौरान ही उन्हें जहर दिया गया था।
- **देहांत:** **30 अक्टूबर, 1883** को दीपावली के दिन **अजमेर** में उनका निर्वाण हुआ।

#### 5. विश्लेषण: सुधार या पुनरुत्थान?

आर्य समाज 'सुधारवादी' होने के साथ-साथ 'पुनरुत्थानवादी' अधिक था। जहाँ राजा राममोहन राय यूरोप की ओर देख रहे थे, दयानंद सरस्वती ने वेदों की ओर देखकर भारतीयों का 'आत्म-सम्मान' जगाया। विलेंटाइन शिरोल ने आर्य समाज को '**भारतीय अशांति का जन्मदाता**' कहा था, जो इसकी राजनैतिक शक्ति का प्रमाण है। RPSC परीक्षाओं में **परोपकारिणी सभा के अध्यक्ष** और **सत्यार्थ प्रकाश की रचना स्थली** (उदयपुर) से संबंधित तथ्य अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं।

#### 6. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य:** स्वामी दयानंद ने हिंदी को '**आर्य भाषा**' और राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाए पर बल दिया।
- **तथ्य:** 'स्वराज्य' शब्द का प्रयोग करने वाले वे प्रथम भारतीय थे।
- **नोट:** स्वामी जी ने जोधपुर के महाराजा **जसवंत सिंह द्वितीय** को उनकी विलासी जीवनशैली के लिए फटकार लगाई थी, जिससे रुष्ट होकर उन्हें जहर देने की साजिश रची गई।
- **विरोधाभास:** वे वेदों को 'अपौरुषेय' (त्रुटिहीन) मानते थे, लेकिन मूर्तिपूजा और अवतारवाद को पूरी तरह नकारते थे।

#### 7. संदर्भ तालिका (Quick Scan)

प्रश्न का केंद्र	उत्तर / तथ्य	परीक्षा महत्व
मूल नाम	मूल शंकर	जन्म स्थान - टंकारा।

स्थापना वर्ष	1875	स्थान - बॉम्बे।
मुख्य ग्रंथ	सत्यार्थ प्रकाश	भाषा - हिंदी।
राजस्थान में संस्था	परोपकारिणी सभा (1883)	स्थान - उदयपुर।
निर्वाण स्थल	अजमेर	वर्ष - 1883।
शिक्षा संस्थान	D.A.V. और गुरुकुल	शिक्षा के दो अलग मॉडल।

wincompete

## अध्याय 23: रामकृष्ण मिशन एवं स्वामी विवेकानंद: सांस्कृतिक राष्ट्रवाद

जहाँ पिछले आंदोलनों का केंद्र तर्क या वेद थे, वहीं रामकृष्ण मिशन का केंद्र 'मानव सेवा' थी। स्वामी विवेकानंद ने अपने गुरु की आध्यात्मिक अनुभूतियों को एक गतिशील सामाजिक दर्शन में बदल दिया, जिसे 'नव-हिंदूवाद' कहा गया।

### 1. रामकृष्ण परमहंस (1836-1886): आध्यात्मिक आधार

- **परिचय:** कलकत्ता के दक्षिणेश्वर काली मंदिर के पुजारी। इनका मूल नाम **गदाधर चट्टोपाध्याय** था।
- **शिक्षाएं:** इन्होंने सभी धर्मों की सत्यता और उनकी एकता पर बल दिया। उनका प्रसिद्ध सूत्र था— "जितने मत, उतने पथ"।
- **दर्शन:** उन्होंने मूर्ति पूजा को ईश्वर प्राप्ति का एक सोपान माना और '**जीव ही शिव है**' का नारा दिया। अर्थात् मनुष्य की सेवा ही ईश्वर की सच्ची पूजा है।

### 2. स्वामी विवेकानंद (1863-1902): आधुनिक भारत के आध्यात्मिक पिता

- **प्रारंभिक जीवन:** जन्म 12 जनवरी, 1863 को कलकत्ता में। बचपन का नाम **नरेन्द्र नाथ दत्त** था।
- **गुरु से मिलन:** 1881 में रामकृष्ण परमहंस से भेंट हुई, जिसने उनके जीवन को संशय से विश्वास की ओर मोड़ दिया।
- **शिकागो धर्म सम्मेलन (1893):** \* 11 सितंबर, 1893 को अमेरिका के शिकागो में आयोजित 'विश्व धर्म संसद' में उन्होंने भाग लिया।
  - उनके संबोधन "**अमेरिका के भाइयों और बहनों**" ने पश्चिमी जगत को भारतीय संस्कृति की विशालता और सहिष्णुता से परिचित कराया।
  - न्यूयॉर्क हेराल्ड ने उनके बारे में लिखा— "उन्हें सुनने के बाद हमें लगता है कि भारत जैसे विद्वान राष्ट्र में ईसाई मिशनरियों को भेजना कितनी बड़ी मूर्खता है।"

### 3. रामकृष्ण मिशन की स्थापना (1 मई, 1897)

अपने गुरु की मृत्यु के पश्चात उनके संदेशों को संगठित रूप देने के लिए विवेकानंद ने मिशन की स्थापना की।

- **मुख्यालय:** कलकत्ता के पास **बेलूर (हावड़ा)** में। (1898 में बेलूर मठ की स्थापना)।
- **उद्देश्य:** शुद्ध वेदांत का प्रचार करना और समाज के निर्धन व पीड़ित वर्ग की निस्वार्थ सेवा करना।
- **विशेषता:** यह मिशन राजनीति से दूर रहा लेकिन इसने सामाजिक आपदाओं (अकाल, महामारी) के समय सेवा का आदर्श प्रस्तुत किया।

### 4. सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और 'नव-हिंदूवाद' (Neo-Hinduism)

विवेकानंद ने हिंदू धर्म को 'रक्षात्मक' मुद्रा से निकालकर 'आक्रामक' और 'आत्मविश्वासी' बनाया।

- **राष्ट्रवाद:** उन्होंने कहा था कि "अगले 50 वर्षों के लिए केवल 'भारत माता' ही हमारे एकमात्र आराध्य देव होने चाहिए।"
- **युवाओं का आह्वान:** "उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए।"

- **सांस्कृतिक श्रेष्ठता:** उन्होंने पश्चिम की भौतिकता और पूर्व के अध्यात्म के समन्वय पर बल दिया। सुभाष चंद्र बोस ने उन्हें '**आधुनिक राष्ट्रीय आंदोलन का आध्यात्मिक पिता**' कहा था।

---

## 5. विवेकानंद और राजस्थान (RPSC विशेष)

राजस्थान विवेकानंद के जीवन में एक अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

- **खेतड़ी प्रवास:** विवेकानंद अपनी विश्व यात्रा पर जाने से पूर्व और बाद में झुंझुनू जिले के **खेतड़ी** आए। यहाँ के राजा **अजीत सिंह** उनके घनिष्ठ मित्र और भक्त थे।
- **विवेकानंद नाम:** नरेन्द्र नाथ दत्त को '**स्वामी विवेकानंद**' नाम खेतड़ी के राजा अजीत सिंह के सुझाव पर ही मिला था।
- **आर्थिक सहयोग:** खेतड़ी नरेश ने ही विवेकानंद को शिकागो धर्म सम्मेलन में जाने के लिए आर्थिक सहायता और केसरिया साफा व वस्त्र प्रदान किए थे।
- **अन्य स्थल:** उन्होंने अलवर और अजमेर की भी यात्राएँ कीं।

---

## 6. विश्लेषण: 'सेवा' ही 'साधना' है

रामकृष्ण मिशन का महत्व केवल धार्मिक नहीं, बल्कि 'मानवतावादी' है। विवेकानंद ने 'वेदांत' को हिमालय की कंदराओं से निकालकर झोपड़ियों तक पहुँचाया। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि भूखे पेट भक्ति नहीं हो सकती (Propounded the idea that religion is not for empty bellies)। RPSC परीक्षाओं में अक्सर **खेतड़ी के राजा अजीत सिंह** के साथ उनके संबंधों और **शिकागो सम्मेलन के प्रभाव** पर प्रश्न पूछे जाते हैं। यह आंदोलन ही था जिसने भारतीय राष्ट्रवाद को एक 'नैतिक और आध्यात्मिक' आधार प्रदान किया।

---

## 7. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य:** स्वामी विवेकानंद की शिष्या **मार्ग्रेट नोबल** को '**सिस्टर निवेदिता**' के नाम से जाना जाता है, जिन्होंने भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन में भी सहयोग दिया।
- **तथ्य:** 12 जनवरी (विवेकानंद का जन्मदिवस) को भारत में '**राष्ट्रीय युवा दिवस**' के रूप में मनाया जाता है।
- **नोट:** विवेकानंद ने 'प्रबुद्ध भारत' (अंग्रेजी) और 'उद्बोधन' (बंगाली) पत्रिकाओं का संपादन किया।
- **विरोधाभास:** जहाँ कई पश्चिमी विचारक भारत को 'सपेरो का देश' मानते थे, विवेकानंद ने अपनी विद्वता से यह सिद्ध किया कि भारत दर्शन और संस्कृति में विश्व का गुरु है।

---

wincompete

## 8. संदर्भ तालिका (Quick Scan)

प्रश्न का केंद्र	उत्तर / तथ्य	परीक्षा महत्व
मूल नाम	नरेन्द्र नाथ दत्त	बचपन का नाम।
गुरु	रामकृष्ण परमहंस	मूल नाम- गदाधर चट्टोपाध्याय।
मिशन की स्थापना	1897	स्थान- बेलूर (प. बंगाल)।
शिकागो सम्मेलन	1893	भारत का प्रतिनिधित्व।
राजस्थान संबंध	खेतड़ी नरेश अजीत सिंह	नामकरण और सहयोग।
प्रसिद्ध पुस्तकें	राजयोग, कर्मयोग, ज्ञानयोग	दार्शनिक रचनाएँ।

wincompete

## अध्याय 24: अलीगढ़ आंदोलन, थियोसोफिकल सोसाइटी एवं प्रार्थना समाज

19वीं शताब्दी का सुधार आंदोलन केवल बंगाल तक सीमित नहीं रहा। इसने मुस्लिम समाज के आधुनिकीकरण, महाराष्ट्र में सामाजिक न्याय और दक्षिण भारत में आध्यात्मिक पुनरुत्थान के रूप में नए आयाम स्थापित किए।

### 1. प्रार्थना समाज (Prarthana Samaj): महाराष्ट्र का पुनर्जागरण

प्रार्थना समाज ने महाराष्ट्र में वही भूमिका निभाई जो बंगाल में ब्रह्म समाज ने निभाई थी।

- **स्थापना:** 1867 में बॉम्बे में।
- **संस्थापक:** डॉ. आत्माराम पांडुरंग।
- **प्रमुख व्यक्तित्व:** महादेव गोविंद रानाडे (M.G. Ranade) और आर.जी. भंडारकर। रानाडे के जुड़ने के बाद यह आंदोलन अधिक प्रभावशाली हुआ।
- **सिद्धांत:** यह आंदोलन हिंदू धर्म के भीतर रहकर 'तर्क' और 'भक्ति' का समन्वय था।
  - मूर्तिपूजा और पुरोहितवाद का विरोध।
  - जाति प्रथा का विरोध और अंतरजातीय विवाह का समर्थन।
  - **रानाडे का योगदान:** उन्होंने 'विधवा विवाह संघ' (Widow Marriage Association) और 'डेक्कन एजुकेशन सोसाइटी' की स्थापना की। उन्हें 'पश्चिम भारत के सुकरात' के रूप में जाना जाता है।

### 2. थियोसोफिकल सोसाइटी (Theosophical Society)

यह एक अंतरराष्ट्रीय आंदोलन था जिसने भारत के प्राचीन दर्शन को विश्व स्तर पर महिमामंडित किया।

- **स्थापना:** 1875 में न्यूयॉर्क (अमेरिका) में मैडम एच.पी. ब्लावत्स्की और कर्नल एच.एस. ओल्कोट द्वारा।
- **भारत में आगमन:** 1879 में वे भारत आए और 1882 में मद्रास के पास अड्यार में अपना अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय स्थापित किया।
- **एनी बेसेंट (Annie Besant) का आगमन:** 1893 में एनी बेसेंट भारत आई और 1907 में इसकी अध्यक्ष बनीं।
- **विचारधारा:** \* यह आंदोलन हिंदू धर्म के पुनर्जन्म और कर्म के सिद्धांतों का समर्थन करता था।
  - उन्होंने वेदों और उपनिषदों के दर्शन को सर्वोच्च माना।
  - **सेंट्रल हिंदू कॉलेज:** 1898 में एनी बेसेंट ने वाराणसी में इसकी स्थापना की, जो बाद में मदन मोहन मालवीय के प्रयासों से बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (BHU) बना।

### 3. अलीगढ़ आंदोलन (Aligarh Movement)

मुस्लिम समाज में आधुनिक शिक्षा और सुधारों का सूत्रपात सर सैय्यद अहमद खान ने किया।

- **प्रणेता:** सर सैय्यद अहमद खान।
- **उद्देश्य:** मुस्लिम समाज में मध्यकालीन जड़ता को समाप्त कर अंग्रेजी शिक्षा और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का समावेश करना।
- **प्रमुख उपलब्धियां:**

- **साइंटिफिक सोसाइटी (1864):** अंग्रेजी के विज्ञान और दर्शन ग्रंथों का उर्दू में अनुवाद करने हेतु।
- **तहज़ीब-उल-अखलाक (Tehzib-ul-Akhlaq):** मुस्लिम समाज के आचरण और सभ्यता में सुधार हेतु एक पत्रिका।
- **MAO कॉलेज (1875):** अलीगढ़ में 'मोहम्मडन एंग्लो-ओरिएंटल कॉलेज' की स्थापना। यही 1920 में **अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय (AMU)** बना।
- **राजनैतिक विचार:** सर सैय्यद का मानना था कि मुसलमानों की उन्नति ब्रिटिश शासन के प्रति वफादारी और शिक्षा में निहित है, इसलिए उन्होंने प्रारंभ में कांग्रेस का विरोध किया।

---

#### 4. विश्लेषण: 'परंपरा' और 'आधुनिकता' का द्वंद्व

अध्याय 24 के ये तीनों आंदोलन भारतीय आधुनिकता के अलग-अलग चेहरों को दर्शाते हैं। प्रार्थना समाज ने 'सामाजिक संरचना' (जाति/विवाह) को सुधारने पर बल दिया, थियोसोफिकल सोसाइटी ने 'सांस्कृतिक गर्व' (अध्यात्म) को पुनर्स्थापित किया, और अलीगढ़ आंदोलन ने एक 'अल्पसंख्यक समुदाय' को आधुनिक विज्ञान से जोड़ा। RPSC की दृष्टि से **अड्यार मुख्यालय** और **रानाडे की संस्थाओं** के वर्ष अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। यह समझना आवश्यक है कि इन सुधारों ने ही 20वीं सदी के तीव्र राजनैतिक आंदोलनों के लिए एक शिक्षित और जागरूक आधार तैयार किया।

---

#### 5. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य:** सर सैय्यद अहमद खान ने 'पीरी-मुरीदी' (गुरु-चेला) प्रथा की कड़ी आलोचना की थी।
- **तथ्य:** एनी बेसेंट भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की **प्रथम महिला अध्यक्ष** (1917, कलकत्ता अधिवेशन) भी बनीं।
- **नोट:** राजस्थान में थियोसोफिकल सोसाइटी का प्रभाव कम था, लेकिन सर सैय्यद के अलीगढ़ आंदोलन के विचारों का प्रभाव यहाँ के मुस्लिम बुद्धिजीवियों पर पड़ा।
- **विरोधाभास:** सर सैय्यद ने प्रारंभ में हिंदू-मुस्लिम एकता की बात की थी (भारत को एक दुल्हन और हिंदू-मुस्लिम को उसकी दो आँखें कहा था), लेकिन बाद में वे कांग्रेस के विरोधी हो गए।

## 6. संदर्भ तालिका (Quick Scan)

आंदोलन / संस्था	वर्ष	प्रमुख व्यक्ति	मुख्यालय / मुख्य केंद्र
प्रार्थना समाज	1867	आत्माराम पांडुरंग / एम.जी. रानाडे	बॉम्बे
थियोसोफिकल सोसाइटी	1882 (भारत)	ब्लावत्स्की / एनी बेसेंट	अड्यार (मद्रास)
अलीगढ़ आंदोलन	1875	सर सैय्यद अहमद खान	अलीगढ़
विधवा पुनर्विवाह संघ	1861	एम.जी. रानाडे	पुणे
साइंटिफिक सोसाइटी	1864	सर सैय्यद अहमद खान	गाजीपुर / अलीगढ़

यह अध्याय 24 पूर्ण हुआ।

wincompete

## अध्याय 25: निम्न जाति आंदोलन एवं सुधारों का निष्कर्ष

19वीं सदी के सुधार आंदोलनों का एक महत्वपूर्ण पक्ष वह संघर्ष था जो समाज के सबसे निचले पायदान पर खड़े लोगों ने अपने मानवीय अधिकारों के लिए लड़ा। इस आंदोलन ने ब्राह्मणवादी वर्चस्व को तर्क और इतिहास के माध्यम से चुनौती दी।

### 1. महात्मा ज्योतिबा फुले एवं सत्यशोधक समाज

महाराष्ट्र में निम्न जाति आंदोलन के वास्तविक प्रणेता ज्योतिबा फुले थे। उन्होंने सामाजिक दासता की जड़ों पर प्रहार किया।

- **सत्यशोधक समाज की स्थापना:** 24 सितंबर, 1873 को पुणे में।
- **उद्देश्य:** शोषित वर्गों (शूद्र एवं अति-शूद्र) को मानव अधिकारों के प्रति जागरूक करना और उन्हें धार्मिक व मानसिक गुलामी से मुक्त करना।
- **प्रमुख दर्शन:** फुले ने तर्क दिया कि 'आर्य' बाहरी आक्रमणकारी थे जिन्होंने भारत के मूल निवासियों (अनार्यों) को गुलाम बनाया। उन्होंने पुरोहितों के बिना विवाह संस्कार संपन्न कराने की प्रथा शुरू की।
- **उपाधि:** 1888 में एक विशाल जनसभा में उन्हें 'महात्मा' की उपाधि दी गई।

### 2. 'गुलामगिरी' एवं अन्य साहित्यिक कृतियाँ

फुले ने अपनी लेखनी को सामाजिक क्रांति का शस्त्र बनाया।

- **गुलामगिरी (1873):** यह उनकी सबसे प्रसिद्ध पुस्तक है। उन्होंने इसे अमेरिकी गृहयुद्ध में दासता को समाप्त करने वाले अमेरिकियों को समर्पित किया। इसमें उन्होंने जाति प्रथा की तुलना 'गुलामी' से की।
- **सार्वजनिक सत्य धर्म:** यह उनकी मृत्यु के बाद प्रकाशित हुई, जिसमें उन्होंने 'विश्व धर्म' की संकल्पना प्रस्तुत की।
- **इशारा:** इस पुस्तक में उन्होंने किसानों और पिछड़ी जातियों की दयनीय स्थिति का चित्रण किया।

### 3. डॉ. अंबेडकर के उदय की पूर्वपीठिका

ज्योतिबा फुले के कार्यों ने 20वीं सदी में डॉ. बी.आर. अंबेडकर के लिए एक तैयार वैचारिक धरातल प्रदान किया।

- डॉ. अंबेडकर, ज्योतिबा फुले को अपना तीसरा गुरु मानते थे (बुद्ध और कबीर के बाद)।
- 'सत्यशोधक समाज' द्वारा शुरू की गई तर्कशीलता और शिक्षा पर बल को अंबेडकर ने 'संवैधानिक अधिकारों' की लड़ाई में बदल दिया।
- फुले द्वारा शुरू किया गया 'छुआछूत विरोधी' संघर्ष आगे चलकर 'मूकनायक' और 'बहिष्कृत हितकारिणी सभा' का आधार बना।

### 4. 19वीं सदी के सुधारों का समग्र मूल्यांकन (निष्कर्ष)

बिंदु 5 के अंतर्गत हमने ब्रह्म समाज से लेकर सत्यशोधक समाज तक का अध्ययन किया। इनका सामूहिक निष्कर्ष इस प्रकार है:

सफलताएं:

- **मानवतावादी दृष्टिकोण:** धर्म के स्थान पर 'मनुष्य' को केंद्र में लाया गया।

- **कानूनी सुधार:** सती प्रथा निषेध (1829) और विधवा विवाह (1856) जैसे ऐतिहासिक कानून बने।
- **सांस्कृतिक आत्मविश्वास:** पाश्चात्य संस्कृति के अंधानुकरण के स्थान पर अपनी जड़ों की श्रेष्ठता (विवेकानंद, दयानंद) को पहचाना गया।

#### सीमाएं:

- **सीमित आधार:** अधिकांश आंदोलन शहरी और शिक्षित मध्यम वर्ग तक ही सीमित रहे; ग्रामीण आबादी अछूती रही।
- **सांप्रदायिक विभाजन:** कुछ आंदोलनों के पुनरुत्थानवादी स्वरूप ने भविष्य में सांप्रदायिक मतभेदों के बीज भी बोए।

### 5. विश्लेषण: 'सुधार' से 'न्याय' की ओर

19वीं सदी के प्रारंभिक सुधार (राजा राममोहन राय) जहाँ 'धार्मिक शुद्धि' पर केंद्रित थे, वहीं अंत तक आते-आते (ज्योतिबा फुले) वे 'सामाजिक न्याय' पर केंद्रित हो गए। फुले ने पहली बार यह पहचान की कि सामाजिक कुरीतियों का मूल कारण 'शक्ति संरचना' और 'जाति' है। RPSC परीक्षाओं में अक्सर 'गुलामगिरी' के समर्पण और सत्यशोधक समाज की स्थापना तिथि पर प्रश्न पूछे जाते हैं। यह आंदोलन ही था जिसने यह सिद्ध किया कि राजनैतिक स्वतंत्रता तब तक अर्थहीन है जब तक सामाजिक समानता न हो।

### 6. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य:** ज्योतिबा फुले की पत्नी सावित्रीबाई फुले ने महिला शिक्षा और विधवाओं के संरक्षण में अभूतपूर्व योगदान दिया।
- **तथ्य:** दक्षिण भारत में इसी दौरान नारायण गुरु ने "एक जाति, एक धर्म, एक ईश्वर" का नारा दिया था।
- **नोट:** राजस्थान में निम्न जाति आंदोलन का संगठित रूप 20वीं सदी में अधिक स्पष्ट हुआ (जैसे- जयनारायण व्यास और हरिभाऊ उपाध्याय के प्रयास), लेकिन फुले के विचारों का प्रभाव यहाँ की प्रगतिशील रियासतों पर पड़ा।
- **विरोधाभास:** जहाँ कई उच्च वर्णीय सुधारक 'वेदों' की ओर लौट रहे थे, फुले वेदों को ही शोषण के यंत्र के रूप में देख रहे थे, जो वैचारिक विविधता को दर्शाता है।

### 7. संदर्भ तालिका (Quick Scan)

प्रश्न का केंद्र	उत्तर / तथ्य	परीक्षा महत्व
सत्यशोधक समाज	1873 (पुणे)	संस्थापक: ज्योतिबा फुले।

गुलामगिरी	1873	समर्पित: अमेरिकियों को।
अंबेडकर के गुरु	ज्योतिबा फुले	वैचारिक उत्तराधिकार।
प्राथमिक उद्देश्य	शूद्रों का उत्थान	तर्क और शिक्षा के माध्यम से।
1829 का कानून	सती प्रथा निषेध	लॉर्ड विलियम बेंटिक।
1856 का कानून	विधवा पुनर्विवाह	लॉर्ड कैनिंग।

#### संदर्भ सूची:

1. आधुनिक भारत का इतिहास - बी.एल. ग्रोवर।
2. आधुनिक भारत का इतिहास - विपिन चंद्र।
3. आधुनिक भारत का इतिहास - स्पेक्ट्रम (राजीव अहीर)।
4. आधुनिक भारत का इतिहास - डॉ. सुमित सरकार।
5. *India's Struggle for Independence* - Bipan Chandra.
6. आधुनिक भारत का इतिहास - आर.एल. शुक्ल (हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय)।
7. *India's Struggle for Independence* - Bipan Chandra.
8. आधुनिक भारत का इतिहास - स्पेक्ट्रम (राजीव अहीर)।
9. *RPSC RAS/PSI PYQ Compendium (Political Associations)*.
10. *Indian National Evolution* - Amvika Charan Mazumdar.
- 11.
12. *Administrative History of Modern India* - P.N. Chopra.
13. *Economic History of India* - R.C. Dutt.
14. *RPSC RAS Previous Year Papers (Economics and History Section)*.
15. *RPSC RAS Previous Year Compendium (Modern India)*.
16. *Land Systems of British India* - B.H. Baden-Powell.
17. *RPSC RAS/PSI PYQ Analysis (Administrative History)*.
18. *Economic History of India* - V.B. Singh.
19. *History of the Indian National Congress* - Pattabhi Sitaramayya.
- 20.